युगानुकूल

जून 2026 मूल्य 25 रुपये

नवरचना

विकास के अनुकरणीय मॉडल आपके द्वार

स्वावलम्बन के पथ को आलोकित करता

दीनदयाल शोध संस्थान

नई दिल्लीः दीनदयाल शोध संस्थान और Foundation for Digital & AI Transformation in Livestock (F–DATAL) के बीच पशुधन एवं सम्बद्ध क्षेत्रों को डिजिटल प्रणालियों और डेटा आधारित कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) जैसे माध्यमों से सशक्त बनाने हेतु परस्पर सहयोग हेतु एक MOU पर हस्ताक्षर हुये। संस्थान की ओर से संगठन सचिव श्री अभय महाजन जी ने तथा F– DATAL की ओर से उनके अध्यक्ष डा. श्रीश निगम जी ने हस्ताक्षर किये।

नई दिल्लीः यमुना बायोडायवर्सिटी पार्क, दिल्ली के भ्रमण के दौरान संगठन सचिव श्री अभय महाजन जी ने प्रोफेसर सी आर बाबू जी एवं प्रोफेसर खुदसार जी के साथ वेलकम झील के पुनर्जीवन और चित्रकूट की जैव विविधता विशेषतः मंदाकिनी नदी और कामदगिरि के संदर्भ में विमर्श किया।

कोषाध्यक्ष श्री वसंत पंडित जी, रोहतास नगर के विधायक श्री जितेन्द्र महाजन जी और सी.ई.ओ श्री अमिताभ वशिष्ठ भी इस अवसर पर उपस्थित रहे। दिल्ली का यमुना बायोडायवर्सिटी पार्क लगभग 500 एकड़ में फैला है और प्रोफेसर बाबू और उनकी टीम के लगभग दो दशकों की मेहनत का प्रतिफल है, यह देश का पहला जैव विविधता पार्क है।

संस्थापक
नानाजी देशमुख

प्रबन्ध सम्पादक
अमिताभ वशिष्ठ

सम्पादक
राजेश दुबे

आवरण सज्जा एवं लेआउट
लक्ष्मी नारायण शुक्ला
अंशुमान सिंह
सतीश मालवीय

विशेष सहयोग
आशीष सक्सेना

प्रकाशक
अभय महाजन
दीनदयाल शोध संस्थान के लिये
7-ई, स्वामी रामतीर्थ नगर, रानी झांसी मार्ग, झण्डेवाला एक्स., नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित
दूरभाष : 23526735
ईमेल : dridelhi@dri.org.in
info@dri.org.in

मुद्रक :
प्रितिका प्रिंटर्स
ए-21/27, नारायण इण्ड. एरिया
दिल्ली-110028

पृष्ठ सं. 5 :
चित्रकूट ने रचा योग का अनूठा मॉडल : 111 केंद्रों से पहुंचे साधक, ग्रामोदय विश्वविद्यालय में हुआ विराट सामूहिक योग आयोजन

पृ.सं. 15-महाराणा प्रताप की जयंती पर दीनदयाल शोध संस्थान ने किया उनके पराक्रम एवं पुरुषार्थ का स्मरण

पृ.सं. 26—दीनदयाल शोध संस्थान के प्रकल्पों में मनाई गई बाबा साहेब की 135वीं जन्म जयंती

चित्रकूट मॉडल : जब योग बना सामाजिक एकात्मता का सेतु 8
जन शिक्षण संस्थान द्वारा जिला कारागार रगौली में महिला- पुरुष बन्दियों.... 13
माँ मंदाकिनी को सदानीरा एवं श्री कामदगिरि के मूल स्वरूप को बनाए ... 18
स्वावलंबन केन्द्र इटरौर के महिला मंडल द्वारा भूमि सुपोषण एवं गर्भस्थ शिशु.... 21
उद्यमिता विद्यापीठ में केव्हीआईसी द्वारा फ्रूट एंड वेजिटेबल प्रोसेसिंग... 22
सुरेंद्रपाल ग्रामोदय विद्यालय चित्रकूट की कक्षा 12वीं की छात्रा 27
ग्राम नकैला में ग्रीष्मकालीन पोषकीय गृह वाटिका एवं भूमि सुपोषण पर.... 28
कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा टिकाऊ खेती हेतु संतुलित उर्वरक प्रयोग हेतु 30
माँ मंदाकिनी के निर्मल, अविरल प्रवाह हेतु आरोग्यधाम में दो दिवसीय 31
सीवेज प्रबंधन एवं पारिस्थितिक पुनर्स्थापन के लिए विशेषज्ञों द्वारा किये गये... 34
चित्रकूट में प्रबुद्ध जन गोष्ठी में भारत को पुनः 'विश्व गुरु' बनाने पर मंथन 35
ग्राम कहेटा माफी के बलिया पुरवा में भूमि सुपोषण कार्यक्रम का आयोजन 37
कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा ग्रामों में 'संतुलित उर्वरक उपयोग जागरूकता अभियान... 38
चित्रकूटधाम पधारे परमहंस स्वामी श्री अड़गड़ानंद जी महाराज ने डीआरआई... 39-40
कृषि विज्ञान केन्द्र गनीवां, चित्रकूट में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस 47
राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर हुई विचार गोष्ठी 50
आरोग्यधाम के दंत चिकित्सा विभाग में शुरू हुई लेज़र डेंटिस्ट्री, शोध-नवाचार की... 51
सुरेन्द्रपॉल ग्रामोदय विद्यालय में 3 एमपी बटालियन रीवा के अन्तर्गत 10 दिवसीय... 53
खेत बचाओ अभियान कार्यक्रम, कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों ने किसानों ... 55
बाल जगत प्रकल्प में लोकमाता सुकळीकर ताई की स्मृति में आंतरिक जलतरण ... 57
विश्व पर्यावरण दिवस पर 'जलवायु के लिए अभी कार्यवाही' एवं 'प्रकृति से प्रेरणाः जलवायु... 59
कृषि विज्ञान केंद्र एवं आत्मा परियोजना द्वारा कृषकों को दिया ग्रामीण कौशल विकास प्रशिक्षण 63
जनजातीय बाहुल्य ग्राम बांका में मनाया गया भगवान बिरसा मुंडा जी का 126वां बलिदान... 65
औषधीय पौधों की उन्नत खेती, प्रसंस्करण एवं उपयोग" पर प्रशिक्षण 67
केवीके द्वारा जल संकटग्रस्त ग्रामों में तालाब जीर्णोद्धार का कार्य, ग्राम वासियों ने ... 69
स्वाध्याय मंडल-अप्रैल, मई एवं जून 70

योग, प्राकृतिक चिकित्सा और आयुर्वेद की त्रिवेणी है आरोग्यधाम

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस एक वैश्विक स्वास्थ्य उत्सव के रूप में विकसित हुआ है। योग केवल एक जीवनशैली नहीं है बल्कि एक शक्तिशाली अनुशासन है। योग भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा की अमूल्य धरोहर है, जो केवल शारीरिक व्यायाम नहीं बल्कि एक आध्यात्मिक अनुशासन है। इसका मुख्य उद्देश्य शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक ऊर्जा के बीच संतुलन स्थापित कर मन को शांत करना और 'स्वयं' को जानना है। यह मानसिक स्पष्टता, शारीरिक स्वास्थ्य और भावनात्मक संतुलन को बढ़ावा देता है। इसके लाभों ने लाखों लोगों को महामारी जैसे चुनौतीपूर्ण समय में भी लचीलापन और कल्याण बनाए रखने में मदद की है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने योग के माध्यम से समग्र स्वास्थ्य देखभाल के प्रति भारत के दृष्टिकोण पर बल दिया था, उनका मानना है कि योग और आयुर्वेद इस दृष्टिकोण के आवश्यक स्तंभ हैं। भारत रत्न नानाजी देशमुख ने भी आज से साढ़े तीन दशक पूर्व योग, प्राकृतिक चिकित्सा और आयुर्वेद की त्रिवेणी के रूप में आजीवन स्वास्थ्य की परिकल्पना को साकार रूप देने के लिए चित्रकूट में आरोग्यधाम की स्थापना की थी।

आरोग्यधाम का आयुर्वेद अस्पताल एक ऐसा चिकित्सालय है, जहां सिर्फ उपचार नहीं होता बल्कि रोग को जड़ मूल से नष्ट करने के लिए सतत खोजपूर्ण अनुसंधान भी किया जाता है। धार्मिक, आध्यात्मिक नगरी चित्रकूट में छिपी स्वस्थ रहने की अनूठी बूटी को पहचाना भारत रत्न राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख ने, और उसके बाद उन्होंने जीवन भर निरोगी रहने की अपनी परिकल्पना को साकार करने के केंद्र के लिए इस पर्वतीय इलाके को चुन लिया। चित्रकूट में प्रवेश करते ही आभास हो जाता है, जैसे आप किसी अलौकिक शक्तियों वाले क्षेत्र में पहुंच गए हो। पर्वतीय श्रृंखला से घिरी इस नगरी में एक तरफ आस्था से सबको नतमस्तक कराता कामदगिरि पर्वत है, दूसरी ओर मन को प्रफुल्लित करने वाली हरी-भरी वादियां। हर कदम पर स्थापित मठ-मंदिर यहां के धार्मिक महत्व और पुरातात्विक इतिहास की गवाही देते हैं।

आयुर्वेद अस्पताल के आसपास का प्राकृतिक वातावरण मन को लुभाने वाला है, इसीलिए यहां उपचार के लिए आने वाले रोगियों का मर्ज दवा के साथ-साथ प्राकृतिक वातावरण की अनुभूति पाकर उड़न-छू हो जाता है। आरोग्यधाम में आयुर्वेद पद्धति के अलावा योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा उपचार भी किया जाता है। परिसर में पैदा की जाने वाली आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों से जहां औषधि तैयार की जाती है, वही शोध संस्थान में आजीवन निरोगी रहने के लगातार अनुसंधान किए जा रहे हैं, आरोग्यधाम का योग विभाग उन्हीं में से एक है। जिसके माध्यम से प्रतिवर्ष सैकड़ों की संख्या में योग प्रशिक्षक तैयार किए जाते हैं।

गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की तैयारी के लिए आरोग्यधाम के योगा विभाग द्वारा 11 से 13 जून तक लगभग 200 योग प्रशिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण दिया गया। इसके उपरांत 14 से 20 जून तक चित्रकूट क्षेत्र के 111 स्थानों पर 200 से अधिक प्रशिक्षकों द्वारा नियमित योगाभ्यास कराया गया। इस प्रकार चित्रकूट में योग दिवस को केवल एक दिन का आयोजन न बनाकर जन-जागरण, जन-स्वास्थ्य और सामाजिक एकात्मता के सप्ताहव्यापी अभियान में परिवर्तित कर दिया गया। इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की थीम "स्वस्थ वृद्धावस्था के लिए योग" रही, जिसके अनुरूप कार्यक्रम में योग को स्वस्थ, सक्रिय और संतुलित जीवन का आधार बताया गया।

— अमिताभ वशिष्ठ

चित्रकूट ने रचा योग का अनूठा मॉडल : 111 केंद्रों से पहुंचे साधक, ग्रामोदय विश्वविद्यालय में हुआ विराट सामूहिक योग आयोजन

संतों, समाजसेवियों, शिक्षण संस्थाओं और जनसमुदाय की सहभागिता से साकार हुआ चित्रकूट की एकात्मता का अद्भुत स्वरूप

एमपी–यूपी सांस्कृतिक एकात्मता और सप्ताह भर चले जन–अभियान की ऊर्जा से योगमय हुआ चित्रकूट

चित्रकूट, 21 जून 2026/ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2026 के अवसर पर महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित सामूहिक योग कार्यक्रम केवल एक योग आयोजन नहीं, बल्कि चित्रकूट की सांस्कृतिक एकात्मता, सामाजिक समरसता और जनभागीदारी का अद्वितीय उत्सव बन गया। मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती चित्रकूट क्षेत्र के 111 योग केंद्रों से पहुंचे एक हजार से अधिक महिला-पुरुष योग साधकों ने एक साथ योगाभ्यास कर चित्रकूट मॉडल की विशिष्ट पहचान को सशक्त रूप से प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ संत समाज की गरिमामयी उपस्थिति में दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. आलोक चौबे, संतोषी अखाड़ा के महंत श्री रामजी दास, भरत मंदिर के महंत श्री दिव्यजीवन दास, कामतानाथ प्रथम मुखारविंद के डॉ. मदन गोपाल दास, गायत्री शक्तिपीठ के संचालक डॉ. रामनारायण त्रिपाठी, महंत श्री सीताशरण जी महाराज एवं महंत श्री गोविन्द दास जी महाराज द्वारा भारत माता के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ।

इस अवसर पर अपने आशीर्वचन में महंत श्री रामजी दास ने कहा कि योग मानव को सुख, शांति और सौहार्द की दिशा में अग्रसर करता है। यह ऋषि-मुनियों की अमूल्य धरोहर है, जिसका उल्लेख हमारे प्राचीन आर्ष ग्रंथों में मिलता है। उन्होंने योग को जीवन का अभिन्न अंग बनाने का आह्वान किया।

दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने कहा कि योग का वास्तविक अर्थ है—जोड़ना। चित्रकूट का यह आयोजन उसी भावना का सजीव उदाहरण है। कभी चित्रकूट एक सांस्कृतिक क्षेत्र था, जहां प्रशासनिक सीमाओं का कोई महत्व नहीं था। आज पुनः वही भाव साकार होता दिखाई दे रहा है, जब मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के 111 केंद्रों के योगाभ्यासी एक साथ योग साधना के लिए एक मंच पर एकत्र हुए हैं।

महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. आलोक चौबे ने स्वागत उद्बोधन में कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रयासों से योग को वैश्विक पहचान मिली है और आज पूरा विश्व योग दिवस मना रहा है। उन्होंने प्रधानमंत्री श्री मोदी को युगपुरुष की संज्ञा देते हुए कहा कि अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस केवल एक दिवस का आयोजन न रहकर वर्ष के 365 दिनों की जीवनशैली बनना चाहिए।

कार्यक्रम के उद्घोषक प्रो. ललित कुमार सिंह रहे। योग सत्र का संचालन प्रख्यात योग प्रशिक्षक डॉ. तुषारकांत शास्त्री के निर्देशन में हुआ। डॉ. शास्त्री ने संधि संचालन, योगासन, संकल्प एवं कल्याण मंत्र की गतिविधियां संपन्न कराईं। वीरेंद्र रिछारिया एवं दशरथ ने क्रमशः सूर्य नमस्कार और प्राणायाम का अभ्यास कराया। वागीश दत्त त्रिवेदी, अरुण, आदर्श, आर्यन, आदित्य, नवीन,

दिव्यांशी पाण्डेय एवं मोनिका सहित अनेक स्वयंसेवक अग्रेसर की भूमिका में रहे। कार्यक्रम का संयोजन प्रो. एस. के. चतुर्वेदी ने किया तथा आभार प्रदर्शन ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. आञ्जनेय पाण्डेय ने किया।

चित्रकूट क्षेत्र के 12 संकुलों से आए योग साधकों ने इस आयोजन को व्यापक जनभागीदारी का स्वरूप प्रदान किया। इस आयोजन की विशेषता यह रही कि इसके पूर्व 111 योग केंद्रों पर एक सप्ताह तक नियमित योगाभ्यास कराया गया, जिसके बाद सभी साधक एक स्थान पर एकत्रित हुए।

ॐ के उच्चारण, वैदिक मंत्रोच्चार एवं **"ॐ संगच्छध्वं संवदध्वं"** की प्रार्थना के साथ प्रारंभ हुए योगाभ्यास में संधि संचालन, योगासन, सूर्य नमस्कार, प्राणायाम, ध्यान, संकल्प तथा "सर्वे भवन्तु सुखिनः" के कल्याण मंत्र का सामूहिक उच्चारण किया गया। संपूर्ण वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा, अनुशासन और सकारात्मक चेतना से अनुप्राणित रहा।

इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की थीम "स्वस्थ वृद्धावस्था के लिए योग" रही, जिसके अनुरूप कार्यक्रम में योग को स्वस्थ, सक्रिय और संतुलित जीवन का आधार बताया गया।

उल्लेखनीय है कि यह कार्यक्रम पूज्य संत-महात्माओं, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, दीनदयाल शोध संस्थान, सद्‌गुरु सेवा संघ ट्रस्ट, नगर पंचायत, सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं, स्थानीय निकायों, प्रशासन तथा चित्रकूट के नागरिकों के संयुक्त सहयोग से आयोजित किया गया।

इस वर्ष के अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की तैयारी के लिए दीनदयाल शोध संस्थान के आरोग्यधाम में 11 से 13 जून तक लगभग 200 योग प्रशिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण दिया गया। इसके उपरांत 14 से 20 जून तक चित्रकूट क्षेत्र के 111 स्थानों पर 200 से अधिक प्रशिक्षकों द्वारा नियमित योगाभ्यास कराया गया। इस प्रकार चित्रकूट ने योग दिवस को केवल एक दिन का आयोजन न बनाकर जन-जागरण, जन-स्वास्थ्य और सामाजिक एकात्मता के सप्ताहव्यापी अभियान में परिवर्तित कर दिया।

चित्रकूट का यह जन-आंदोलन आधारित योग मॉडल देशभर के लिए प्रेरणा का विषय बन सकता है। यहां संत समाज, सामाजिक संस्थाएं, शैक्षणिक परिसर, ग्राम समुदाय और नगरवासी एक साथ मिलकर योग को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कर रहे हैं। यही इस आयोजन की सबसे बड़ी उपलब्धि तथा इसकी विशिष्ट पहचान है।

चित्रकूट मॉडल : जब योग बना सामाजिक एकात्मता का सेतु

राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख की कल्पना को साकार करता एक अनूठा जन–अभियान

आलेखः डॉ. जय प्रकाश शुक्ल

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस आज विश्वव्यापी आयोजन बन चुका है। करोड़ों लोग योग को स्वास्थ्य, संतुलन और मानसिक शांति का माध्यम मानकर उससे जुड़ रहे हैं। देश-विदेश में हजारों कार्यक्रम आयोजित होते हैं, किंतु कुछ आयोजन ऐसे भी होते हैं जो केवल योगाभ्यास तक सीमित नहीं रहते, बल्कि समाज निर्माण, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और जनभागीदारी के नए प्रतिमान स्थापित करते हैं।

चित्रकूट में आयोजित सामूहिक योग कार्यक्रम ऐसा ही एक प्रेरक उदाहरण है।

21 जून 2026 को महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का सामूहिक कार्यक्रम केवल एक औपचारिक आयोजन नहीं था। यह चित्रकूट की सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक एकात्मता और सामूहिक शक्ति का ऐसा उत्सव था जिसमें मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्र के 111 योग केंद्रों से एक हजार से अधिक योग साधक एकत्र हुए। संत समाज, सामाजिक संस्थाएx, शैक्षणिक परिसर, स्थानीय निकाय, ग्राम समुदाय और नागरिक समाज के प्रतिनिधि एक मंच पर उपस्थित थे। यह दृश्य केवल योग का नहीं, बल्कि समाज की संगठित शक्ति का प्रतीक था।

योग से समाज को जोड़ने की परिकल्पना

योग का अर्थ केवल शरीर को स्वस्थ रखना नहीं है। भारतीय दर्शन में योग का वास्तविक अर्थ है—जोड़ना। व्यक्ति का स्वयं से, समाज का समाज से और मनुष्य का व्यापक मानवता से जुड़ना। चित्रकूट में योग दिवस का आयोजन इसी व्यापक अर्थ को मूर्त रूप देता है।

दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन के मार्गदर्शन में पिछले कई वर्षों से चित्रकूट

क्षेत्र में योग को जन-अभियान के रूप में विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है। इसकी विशेषता यह है कि कार्यक्रम किसी एक संस्था का नहीं होता, बल्कि संपूर्ण समाज का सामूहिक आयोजन बन जाता है।

योग दिवस से पूर्व आरोग्यधाम में प्रशिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके बाद चित्रकूट क्षेत्र के सैकड़ों स्थानों पर एक सप्ताह तक नियमित योगाभ्यास कराया जाता है। जब अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस आता है तो विभिन्न केंद्रों के योग साधक एक स्थान पर एकत्र होकर सामूहिक योग करते हैं। यह व्यवस्था योग को कार्यक्रम नहीं, बल्कि सामाजिक आंदोलन का स्वरूप प्रदान करती है।

राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख की जीवंत विरासत

चित्रकूट का यह प्रयोग राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख के जीवन दर्शन को समझे बिना पूर्णतः नहीं समझा जा सकता।

नानाजी देशमुख का विश्वास था कि समाज की वास्तविक शक्ति उसकी संगठित चेतना में निहित होती है। वे

मानते थे कि विकास केवल शासन के माध्यम से नहीं, बल्कि समाज की सक्रिय भागीदारी से संभव है। चित्रकूट में उन्होंने जो ग्रामोदय मॉडल विकसित किया, उसका मूल तत्व था—सहयोग, समन्वय और आत्मीय सहभागिता।

आज जब चित्रकूट के संत-महात्मा, शिक्षण संस्थान, ग्राम पंचायतें, सामाजिक संगठन, प्रशासन और आम नागरिक एक साथ योग करते दिखाई देते हैं, तब यह नानाजी की उसी कल्पना का साकार रूप प्रतीत होता है जिसमें समाज स्वयं अपने सांस्कृतिक और सामाजिक उत्थान का वाहक बनता है।

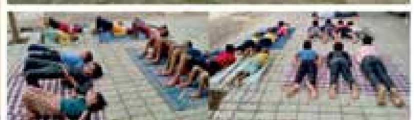

सीमाओं से परे सांस्कृतिक एकात्मता

चित्रकूट की एक विशिष्ट पहचान यह भी है कि यह दो राज्यों—मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश—में विस्तृत सांस्कृतिक क्षेत्र है। प्रशासनिक सीमाएँ भले ही अलग हों, किंतु इसकी सांस्कृतिक चेतना सदियों से एक रही है।

योग दिवस के अवसर पर जब

दोनों राज्यों के 111 केंद्रों से साधक एकत्र होकर एक साथ योगाभ्यास करते हैं, तब यह केवल स्वास्थ्य कार्यक्रम नहीं रह जाता, बल्कि सांस्कृतिक एकात्मता का जीवंत उत्सव बन जाता है। यह आयोजन बताता है कि भारतीय संस्कृति का आधार राजनीतिक सीमाएँ नहीं, बल्कि साझा मूल्य, परंपराएँ और जीवन दृष्टि है।

संत समाज की सक्रिय सहभागिता

चित्रकूट की आध्यात्मिक पहचान उसके संत समाज से जुड़ी है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के इस आयोजन में विभिन्न मठों, मंदिरों और आश्रमों के संत-महात्माओं की सक्रिय सहभागिता विशेष महत्व रखती है।

संतोषी अखाड़ा, भरत मंदिर, कामतानाथ मुखारविंद, गायत्री

शक्तिपीठ तथा अन्य धार्मिक संस्थाओं के संतों ने योग को भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर बताते हुए इसे जीवन का अनिवार्य अंग बनाने का संदेश दिया। इससे कार्यक्रम को केवल शारीरिक स्वास्थ्य अभियान के बजाय आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आधार भी प्राप्त हुआ।

जनभागीदारी का अद्वितीय उदाहरण

आज अनेक सामाजिक अभियानों के सामने सबसे बड़ी चुनौती जनसहभागिता की होती है। चित्रकूट का योग मॉडल इस चुनौती का सफल समाधान प्रस्तुत करता है।

यहाँ योग दिवस की तैयारी केवल मंच और कार्यक्रम तक सीमित नहीं रहती। प्रशिक्षकों का निर्माण, ग्राम स्तर तक पहुँच, स्थानीय संस्थाओं की भागीदारी, संत समाज का मार्गदर्शन, शैक्षणिक परिसरों का सहयोग और नागरिकों की सक्रिय उपस्थिति—ये सभी मिलकर इसे वास्तविक जन-अभियान का स्वरूप देते हैं। यही कारण है कि चित्रकूट का यह प्रयोग केवल योग दिवस का आयोजन नहीं, बल्कि सामाजिक पूंजी निर्माण का माध्यम बन गया है।

भविष्य के लिए एक प्रेरक मॉडल

आज जब पूरी दुनिया तनाव, असंतुलित जीवनशैली और सामाजिक विखंडन जैसी चुनौतियों से जूझ रही है, तब चित्रकूट का यह प्रयोग एक महत्वपूर्ण संदेश देता है। योग केवल व्यक्ति को स्वस्थ बनाने का साधन नहीं, बल्कि समाज को जोड़ने का माध्यम भी बन सकता है।

चित्रकूट ने यह सिद्ध किया है कि यदि समाज, संस्थाएँ और नेतृत्व एक साझा उद्देश्य के साथ आगे बढ़ें तो योग को जन-स्वास्थ्य, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक जागरण के प्रभावी उपकरण के रूप में विकसित किया जा सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2026 का यह आयोजन इस दृष्टि से विशेष महत्व रखता है कि उसने योग को मंच से उतारकर समाज के बीच स्थापित किया है। यही चित्रकूट मॉडल की सबसे बड़ी सफलता है और यही राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख की उस कल्पना का साकार स्वरूप भी है, जिसमें समाज स्वयं अपने विकास, स्वास्थ्य और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का नेतृत्व करता है।

चित्रकूट का यह प्रयोग केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि एक संदेश है—योग जोड़ता है, समाज को संगठित करता है और राष्ट्र निर्माण की दिशा में नई ऊर्जा प्रदान करता है।

जन शिक्षण संस्थान द्वारा जिला कारागार रगौली में महिला-पुरुष बन्दियों को कराया गया योग

चित्रकूट/ 12वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर जिला कारागार रगौली परिसर में कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय द्वारा वित्तपोषित व दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा संचालित जन शिक्षण संस्थान चित्रकूट द्वारा जनभागीदारी के अन्तर्गत महिला-पुरुष बन्दियों को योग कराया गया।

इस अवसर पर जेल अधीक्षक श्री कुश कुमार सिंह, जेलर अजय कुमार, डिप्टी जेलर कौशलेंद्र मिश्रा एवं बृजकिशोरी, अनिल कुमार सिंह निदेशक जन शिक्षण संस्थान तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के चीफ लीगल एड डिफेन्स काउन्सिल गया प्रसाद निषाद व डिप्टी लीगल एड डिफेन्स काउन्सिल चन्द्रपाल पाल व शिवशंकर उपाध्याय व असिस्टेंट लीगल एड डिफेन्स काउन्सिल योगेन्द्र सिंह उपस्थित रहे।

विश्व योग दिवस पर अपने उद्बोधन में जेल अधीक्षक कुश कुमार सिंह ने कहा कि उत्तम स्वास्थ्य जीवन का सबसे बड़ा धन है, योग के माध्यम से व्यक्ति को समाज से जोड़ने की संकल्पना को साकार किया जा सकता है। योग द्वारा

शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा को एक साथ लाने का काम होता है।

जेलर श्री अजय कुमार ने कहा कि योग केवल 1 दिन ना हो बल्कि इसे जीवन का आधार बनाएं एवं अपने जीवन में योग को नियमित चलने वाले क्रिया विधि के रूप में अपनाकर इसे अपने जीवन में उतारे और सदैव स्वस्थ रहें।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सदस्यों द्वारा योग व विधिक जानकारियाँ प्रदान की गईं और बताया गया कि कैसे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के प्रयासों से इस दिवस को मनाने का प्रस्ताव 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) में रखा गया था और इसे रिकॉर्ड 177 देशों का समर्थन मिला और 21 जून 2015 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया गया।

जन शिक्षण संस्थान के निदेशक अनिल कुमार सिंह ने कहा कि जन भागीदारी से अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की मुख्य थीम "योगा फॉर हेल्दी एजिंग" अर्थात "स्वस्थ आयु के लिए योग" की थीम पर आयोजित किया गया। जिसका उद्देश्य बढ़ती उम्र में शारीरिक सक्रियता, मानसिक संतुलन और समग्र स्वास्थ्य को बनाए रखने में योग के महत्व पर जोर देना है।

स्वस्थ आयु के लिए योग के अंतर्गत पतञ्जलि योग पीठ की बहनें श्रीमती पद्मा सिंह व कुमारी अनन्या सिंह, श्रीमती शिल्पा चौहान, श्रीमती पूजा वर्मा एवं नरेंद्र चन्दवंशी, जानकीशरण के सहयोग से जिला कारागार में महिला एवं पुरुष बन्दियों को निरोगी रहने के दृष्टिकोण से 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किया गया। जिसमें प्रशिक्षकों द्वारा प्राणायाम, मुद्राभ्यास, संधियोग, योगासन एवं सूर्य नमस्कार की सभी क्रियाएं व आसन सिखाये गए क्योंकि योग शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक उन्नति तथा सकारात्मक ऊर्जा व शांति के लिए अति आवश्यक है। हम सभी इसे अपने जीवन में समाहित करें ऐसी सभी से अपेक्षा है। कार्यक्रम में योग प्रशिक्षक अनन्या सिंह द्वारा संगीतमय योग की प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम का सफल संचालन एवं संयोजन डिप्टी जेलर श्री कौशलेंद्र मिश्रा ने किया।

महाराणा प्रताप की जयंती पर दीनदयाल शोध संस्थान ने किया उनके पराक्रम एवं पुरुषार्थ का स्मरण

बलरामपुर क्षेत्र में थारु वनवासियों के प्रेरणा स्त्रोत महाराणा प्रताप की जयंती को नानाजी ने एक उत्सव का रूप दिया

गोंडा/वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की जयंती पर उनके पराक्रम एवं पुरुषार्थ का स्मरण दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा विविध कार्यक्रम कर किया गया।

जेष्ठ शुक्ल तृतीया 17 जून 2026 को दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा इमलिया कोडर में वीर शिरोमणि की जयंती हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। इस अवसर पर श्री मणिराम दास छावनी के महंत पूज्य कमल नयन दास जी महाराज, पूर्व मंत्री एवं विधायक श्री रमापति शास्त्री जी, तरबगंज के विधायक श्री प्रेम नारायण पाण्डेय जी, मां पाटेश्वरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर रवि शंकर सिंह जी एवं दीनदयाल शोध संस्थान के वरिष्ठ सदस्य डॉ. विक्रमा प्रसाद पाण्डेय जी, श्री सौम्य अग्रवाल जी एवं थारू जनजाति के प्रमुख श्री कालूराम जी, श्री मंगल प्रसाद थारू जी, बलरामपुर नगर पालिका के अध्यक्ष डॉ. धीरेंद्र प्रताप सिंह जी, भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री जनार्दन प्रसाद तिवारी जी, श्री वेद प्रकाश दुबे जी एवं श्री बाबूलाल शास्त्री जी तथा पचपेड़वा नगर पंचायत के अध्यक्ष श्री रवि वर्मा जी एवं गोंडा, बलरामपुर, अयोध्या साथ ही थारू क्षेत्र के सैकड़ों की संख्या में गणमान्य लोग एवं महिला पुरुष उपस्थित रहे।

इस अवसर पर थारू महिलाओं द्वारा कलश यात्रा निकाली गई एवं थारू जनजाति के परंपरागत लोक नृत्य प्रस्तुत किए गए। भोपाल से आए श्री सुरेश राठौड़ जी ने एक सप्ताह का गाय के गोबर से बनने वाले विभिन्न उत्पादों का प्रशिक्षण दिया साथ ही उसकी प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में लगभग डेढ़ हजार लोग उपस्थित रहे।

वहीं चित्रकूट के उद्यमिता विद्यापीठ सभागार में आयोजित एक अन्य कार्यक्रम में दीनदयाल शोध संस्थान के सचिव अपराजित शुक्ला, महाप्रबंधक डॉ. अनिल जायसवाल, समाज शिल्पी दंपत्ति प्रभारी राजेंद्र सिंह, स्वावलंबन अभियान के प्रभारी डॉ. अशोक पाण्डेय सहित सुरेंद्रपाल ग्रामोदय विद्यालय के प्राचार्य जितेन्द्र श्रीवास्तव, सत्यराम यादव, गंगाराम यादव तथा वरुण त्रिपाठी की उपस्थिति विशेष रूप से

उल्लेखनीय रही। कार्यक्रम का शुभारंभ वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर हुआ। कार्यक्रम का संचालन सुरेंद्रपाल ग्रामोदय विद्यालय के उप प्राचार्य श्री अशोक दीक्षित द्वारा किया गया।

इस अवसर पर संस्थान द्वारा संचालित शैक्षणिक प्रकल्प सुरेंद्र पाल ग्रामोदय विद्यालय, रामनाथ आश्रमशाला, परमानंद आश्रम पद्धति विद्यालय तथा कृष्णा देवी वनवासी बालिका विद्यालय, गुरुकुल संकुल के

शिक्षक-शिक्षिकाओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

इस दौरान व्याख्याता पं. भुवनेश मिश्रा ने अपने वक्तव्य में कहा कि महाराणा प्रताप का नाम जुबां पर आते ही रग-रग में शौर्य और स्वाभिमान की लहर दौड़ने लगती है। वीरता का भाव जागने लगता है। राष्ट्र प्रेम हिलोरें मारने लगता है। भुजाएं तलवार की मूठ खोजने लगती है। जब याद आता है लंबी चोड़ी कद काठी वाला नीले घोड़े पर सवार हाथ में भाला लिए एक ऐसा शूरवीर जिसके विशाल नयन मानों अपने विरोधी को ढूंढ रहे हों। एक ऐसा योद्धा जिसकी तनी हुई मूंछें स्वयं उसकी वीरता का बखान कर रही हों।

इस दौरान वक्ताओं ने कहा कि भारत रत्न पूज्य नानाजी देशमुख ने अपने प्रचारक जीवन में गांव-गांव प्रवास करके वनवासियों के दुख दर्द को जाना समझा है। उत्तर प्रदेश के बलरामपुर क्षेत्र में थारु वनवासियों ने जब महाराणा प्रताप वन-वन भटक कर अपनी सेना का पुनर्गठन कर रहे थे, उस समय ये जनजातियां राणा की सेना में प्रशिक्षण ले रही थी। यह जनजातियां आज भी अपने आप को महाराणा की प्रजा ही मानती है। इनके प्रेरणा स्रोत महाराणा प्रताप की जयंती को नानाजी ने एक उत्सव का रूप दिया।

गौरतलब है कि उत्तर प्रदेश में गोंडा प्रकल्प की जब श्रद्धेय नानाजी ने 77-78 में स्थापना की, वहां नेपाल के सीमावर्ती इलाके से जुड़े इमलिया कोडर में थारु जनजाति का केंद्र है। वहां से नानाजी का बहुत गहरा लगाव रहा है। थारु जनजाति के लोग महाराणा प्रताप के वंशज ही है, और उनकी वीर परंपरा का वह निर्वहन कर रहे हैं। वहां पर जब से संस्थान का काम प्रारंभ हुआ तब से दीनदयाल शोध संस्थान उनकी जयंती और पुण्यतिथि का कार्यक्रम मनाता आ रहा है। महाराणा प्रताप के जीवन काल की विपत्तियों को याद करते हैं तो हमें आज की विपत्तियां छोटी दिखाई पड़ती है। विपत्ति काल में हम कैसे मिल बांटकर रह सकते हैं, कैसे खा सकते हैं, कैसे सेवा कर सकते हैं यह प्रेरणा हमें उनके जीवन प्रसंगों से मिलती है।

मां मंदाकिनी को सदानीरा एवं श्री कामदगिरि के मूल स्वरूप को बनाए रखने हेतु दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा वेबीनार का आयोजन, वर्चुअल कार्यशाला में विशेषज्ञों ने रखे विचार

क्रियान्वयन हेतु प्रमुख एजेंसियों की जवाब देही के साथ विस्तृत कार्य योजना का हुआ प्रस्तुतीकरण

चित्रकूट/ दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, क्षेत्रीय निदेशालय भोपाल के सहयोग से मां मंदाकिनी नदी के पुनर्जीवन, सीवेज प्रबंधन एवं पारिस्थितिक पुनर्स्थापन हेतु प्रस्तावित कार्य योजना सम्बन्धित बैठक का वर्चुअली आयोजन किया गया।

कार्यशाला का शुभारंभ दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन के स्वागत उद्बोधन के साथ हुआ। जिसमें उन्होंने कहा कि चित्रकूट के मूल स्वरूप को बनाये रखते हुए इसके विकास हेतु जनता की पहल एवं पुरूषार्थ तथा शासकीय व सामाजिक संगठनों के सामूहिक प्रयत्न से बेहतर बनाना है। उन्होंने कहा कि नानाजी का हमेशा से ध्येय रहा है कि जनता की पहल और पुरुषार्थ से जो भी काम होता है हमेशा टिकाऊ होता है, नानाजी ने ढ़ाई दशक पूर्व पानी को लेकर काफी कुछ काम जन भागीदारी से करके दिखाया है।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, क्षेत्रीय निदेशालय भोपाल के निदेशक डॉ. अजीत कुमार विद्यार्थी ने वेबीनार का संयोजन करते हुए कहा कि मां मंदाकिनी को सदानीरा बनाने हेतु पूर्व में जो कार्यशाला और चिंतन हुआ है उसके आधार पर जो प्रमुख बातें निकलकर आई उनमें पवित्र कामदगिरि पहाड़ी का पुनर्स्थापन, पैसुनी- मंदाकिनी नदी तंत्र का जलागम प्रबंधन, बाढ़ प्रबंधन, क्षतिग्रस्त वन पारिस्थितिकी तंत्र का पारिस्थितिक पुनर्स्थापन, सीवेज का इन-सीटू उपचार (स्थल पर उपचार), सीवेज प्रबंधन, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन पर क्रियान्वयन के लिए वैज्ञानिक तरीके से जो कार्य योजना तैयार की गई है इसका प्रस्तुतिकरण विशेषज्ञों के समक्ष

रखा गया।

इस अवसर पर प्रसिद्ध पर्यावरणविद् प्रो सी. आर. बाबू ने मां मंदाकिनी नदी को कैसे सदानीरा बना सके और श्री कामतानाथ के स्थल को कैसे मूल स्वरूप में बनाए रखें इसके लिए उन्होंने अपनी जो विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की है उसका सभी विशेषज्ञों के समस्त प्रस्तुतीकरण उनके द्वारा किया गया।

इस मौके पर सतना कलेक्टर सतीश कुमार एस ने कहा कि जब भी चित्रकूट की बात होती है तो जन सामान्यतः पहाड़, जंगल और मंदाकिनी यह तीन प्रमुख विषय निकलकर आते है जिस पर प्रमुखता से कार्य करने की जरूरत है, इस संदर्भ में उन्होंने नगर परिषद के साथ-साथ संबंधित विभागों को निर्देशित करते हुए विशेषज्ञों की रिपोर्ट को ध्यान में रखकर प्रभावी क्रियान्वयन की बात कही।

इस दौरान भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान (IGFRI) झाँसी के डॉ. अरुण शुक्ला द्वारा प्रस्तुतीकरण किया गया। केन्द्रीय भूजल बोर्ड भोपाल तथा मध्य प्रदेश परियोजना विकास कारपोरेशन द्वारा भी प्रस्तुतीकरण किया गया।

इसके अलावा अन्य संबंधित विशेषज्ञों द्वारा भी कार्य योजना पर विचार विमर्श हुआ।

इस वर्चुअल कार्यशाला में सतना के जिला वन अधिकारी मयंक चांदीवाल एवं नगर परिषद चित्रकूट के मुख्य कार्यपालन अधिकारी अंकित सोनी ने भी अपने विचारों को रखा।

कार्यशाला के अंत में समारोप उद्बोधन और आभार व्यक्त करते हुए डीआरआई के कोषाध्यक्ष श्री वसंत पंडित ने कहा कि पैसुनी उद्गम स्थल से लेकर चित्रकूट की मुख्य धारा तक का लगभग 60 प्रतिशत भू-भाग वन विभाग के अन्तर्गत है, फोरेस्ट डिपार्टमेंट के पास फंडिंग की भी कमी नहीं है इसलिए वन विभाग को प्रमुख क्रियान्वयन एजेंसी बनाकर कार्य हो तो बेहतर परिणाम मिल सकेंगे। उन्होंने कहा कि चित्रकूट एक अत्यंत महत्वपूर्ण सांस्कृतिक एवं पारिस्थितिक क्षेत्र है, अपनी जीवनरेखा माँ मंदाकिनी नदी के लिए प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र का पर्यावरणीय संतुलन तथा नदी की पारिस्थितिकी चुनौतियों के समाधान हेतु एक समन्वित, बहु-क्षेत्रीय एवं कार्यान्वयन-उन्मुख दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

इस अवसर पर दीनदयाल शोध संस्थान के मुख्य कार्यपालन अधिकारी दिल्ली श्री अमिताभ वशिष्ठ एवं महाप्रबंधक डॉ. अनिल जायसवाल सहित कार्यकारी एजेंसियों के एक्सपर्ट प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

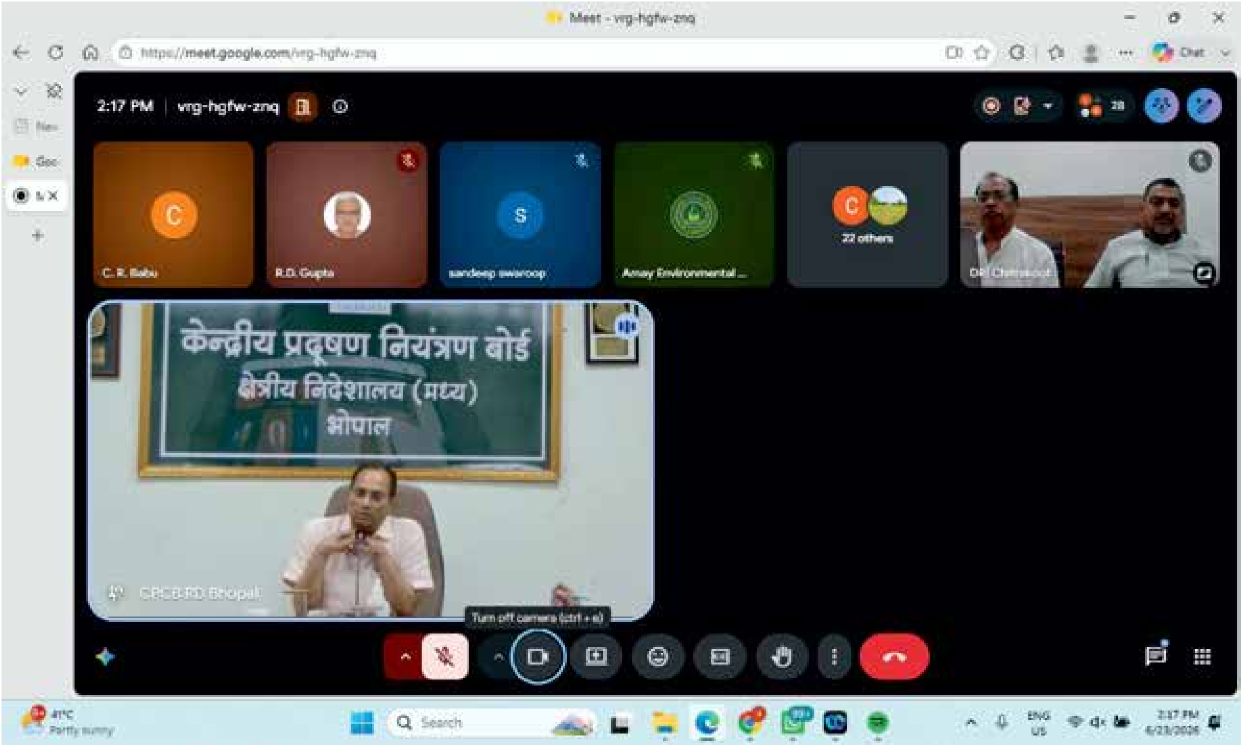

विशेषज्ञों द्वारा सुझाएं प्रमुख बिंदुः

कामदगिरि पहाड़ी का अधिकांश भाग बंजर है; वनस्पति केवल ऊपरी भाग तक सीमित है। पहाड़ी का लगभग 2/3 भाग अत्यधिक क्षरित है, जहाँ अवसादी चट्टानें खुली अवस्था में दिखाई देती हैं। विकसित मृदा परत का अभाव है; सतह ढीली चट्टानों एवं पत्थरों से आच्छादित है। इसके लिए भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान झाँसी एवं केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा परामर्शदाता मोड में कार्यान्वयन किया जाएगा।

पैसुनी नदी के प्रवाह क्षेत्र में भूमिगत जल भंडारण तंत्र का आकलन करने हेतु हाइड्रोजियोलॉजिकल अध्ययन किया जाए और इसका ड्रोन सर्वेक्षण, उपग्रह चित्रों एवं भौतिक सर्वेक्षण के माध्यम से पठार, विस्तृत एवं उथली घाटियाँ, संकरी एवं गहरी घाटियाँ, प्रमुख एवं गौण नाले/जलधाराएँ, सतही अपवाह नालियाँ, वन क्षेत्र का सूचीकरण किया जाए। इसके साथ ब्रह्म कुण्ड का पुनर्जीवन किया जाए। यह गतिविधियाँ स्थानीय जनजातीय समुदायों की सहभागिता से संचालित की जाएँ।

नदी बेसिन में वर्षा जल संचयन संरचनाओं का विकास, घाटियों के खुले भाग में मिट्टी की मेड़बंदी करके विस्तृत एवं उथली तथा संकरी एवं गहरी घाटियों में जलाशयों का विकास किया जाए। ये जलाशय जलग्रहण क्षेत्र से आने वाले अपवाह जल का संचयन करेंगे, वाष्पीकरण के माध्यम से सतही तापमान को नियंत्रित करने में सहायता करेंगे तथा डाउनस्ट्रीम क्षेत्रों में बाढ़ की तीव्रता को कम करेंगे। इससे जनजातीय समुदायों की जल सुरक्षा को समर्थन मिलेगा तथा ढालों पर वनस्पति आवरण के विकास को बढ़ावा मिलेगा।

मृदा से आच्छादित पठारी क्षेत्रों, समतल भू-भागों एवं प्रमुख नालों के किनारे तालाबों एवं रिचार्ज पिट्स का निर्माण किया जाए तथा सतही अपवाह जल को इन संरचनाओं की ओर प्रवाहित किया जाए। वर्षा जल के संचयन हेतु प्रमुख नालों पर लघु अवरोधक बाँध निर्मित किए जाएँ। वाष्पीकरण में कमी लाने के लिए घाटी जलाशयों, तालाबों एवं रिचार्ज पिट्स के तटबंधों पर जामुन, अर्जुन, विटेक्स) और डालबर्गिया पौधों का रोपण किया जाए।

हनुमानधारा तथा यूनियन बैंक के पीछे स्थित सामुदायिक सेप्टिक टैंकों पर विकेन्द्रीकृत सीवेज उपचार प्रणालियां स्थापित की जाएँ, ताकि अपशिष्ट जल द्वारा भूजल एवं मंदाकिनी नदी के प्रदूषण को रोका जा सके। बाढ़ की परिस्थितियों में भी प्रभावी संचालन सुनिश्चित करने हेतु सीवर नेटवर्क को सुदृढ़ किया जाए।

स्वावलंबन केन्द्र इटरौर के महिला मंडल द्वारा भूमि सुपोषण एवं गर्भस्थ शिशु संस्कार का आयोजन

महिलाओं द्वारा पुरुषोत्तम माष सोमवती अमावस्या पर ग्राम उत्सव के रूप में किये गये विविध कार्यक्रम

चित्रकूट/ चित्रकूट जनपद के अन्तर्गत ग्राम पंचायत इटरौर स्वावलंबन केन्द्र में दीनदयाल शोध संस्थान के समाज शिल्पी दंपत्ति प्रकल्प सहयोग से ग्राम इटरौर के महिला मण्डल द्वारा ग्राम उत्सव का आयोजन किया गया। इस एक दिवसीय आयोजन में भजन मंडल एवं महिला मंडल द्वारा पंच परिवर्तन हेतु कार्यक्रम किए गए। जिसमें महिलाओं के द्वारा सामूहिक रूप से पुरुषोत्तम माष सोमवती अमावस्या के शुभ अवसर पर सामूहिक शिव पूजन, भूमि सुपोषण और संरक्षण, गर्भस्थ शिशु संस्कार एवं सामूहिक सहभोज जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम संपन्न हुए।

स्वावलंबन केन्द्र इटरौर के समाज शिल्पी दंपति व संकुल प्रभारी पद्मा त्रिपाठी व मनोज त्रिपाठी ने बताया कि भूमि सुपोषण एवं संरक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत कृषकों एवं महिलाओं द्वारा अपने-अपने खेतों से कलश में मिट्टी भरकर कार्यक्रम स्थल तक लाया गया और वहां उनका विधिवत पूजन कार्यक्रम संपन्न हुआ। पूजन के उपरांत उस मिट्टी को अपने अपने खेतों में छिड़काव किया गया। भूमि की उर्वरा शक्ति कैसे बनाएं रखी जाए तथा उसको प्रदूषित न किया जाए इस संदर्भ में ग्राम वासियों को बताया गया।

दीनदयाल शोध संस्थान के स्वावलंबन अभियान के प्रभारी डॉ. अशोक पांडेय ने बताया कि समाज शिल्पी दंपति एवं संस्थान के कार्यकर्ता ग्राम स्तर तक जाकर इस कार्यक्रम में ग्रामीणों की सहभागिता सुनिश्चित कर रहे हैं। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य भारतीय कृषि चिंतन, भूमि सुपोषण एवं संरक्षण इन संकल्पनाओं को कृषि क्षेत्र में पुनःस्थापित करना है।

इस मौके पर सामूहिक धन संग्रह के द्वारा शिव मंदिर में घंटा चढ़ाया गया। इस अवसर पर दीनदयाल शोध संस्थान के स्वावलंबन अभियान प्रभारी डा. अशोक पांडेय, श्रीमती सीमा पांडेय, महिला मंडल से मंजू विश्वकर्मा, दीपा पटेल, रानी सिंह, मीरा सिंह एवं समाज शिल्पी दंपति पद्मा त्रिपाठी व मनोज त्रिपाठी प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

उद्यमिता विद्यापीठ में केव्हीआईसी द्वारा फ्रूट एंड वेजिटेबल प्रोसेसिंग टेक्नोलॉजी प्रशिक्षण

कृषि छात्रों को जैम, जेली, अचार, स्क्वैश, कैंडी एवं अन्य खाद्य उत्पादों के निर्माण की तकनीकों से कराया अवगत

चित्रकूट/ खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग के द्वारा उद्यमिता विद्यापीठ के माध्यम से महात्मा गांधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कृषि संकाय के विद्यार्थियों हेतु उद्यमिता विद्यापीठ में फ्रूट एंड वेजिटेबल प्रोसेसिंग टेक्नोलॉजी प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को फल एवं सब्जी प्रसंस्करण की आधुनिक तकनीकों, खाद्य संरक्षण, मूल्य संवर्धन, गुणवत्ता नियंत्रण तथा स्वरोजगार के अवसरों की व्यावहारिक कराया गया।

प्रशिक्षण के उद्घाटन अवसर पर खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग प्रशिक्षण केन्द्र के प्राचार्य मनोज सैनी ने कहा कि कृषि आधारित उत्पादों के प्रसंस्करण से किसानों की आय में वृद्धि के साथ-साथ ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार एवं उद्यमिता के नए अवसर सृजित होते हैं। यह प्रशिक्षण विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनने तथा खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में सफल उद्यम स्थापित करने के लिए प्रेरित करेगा।

इस अवसर पर विद्यार्थियों ने प्रशिक्षण के प्रति उत्साह व्यक्त करते हुए इसे अपने कौशल विकास एवं भविष्य के रोजगार के लिए उपयोगी बताया। यह कार्यक्रम युवाओं में उद्यमिता की भावना विकसित करने तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। कार्यक्रम का संचालन फील्ड समन्वयक रमाशंकर शुक्ला द्वारा किया गया तथा फ्रूट प्रोसेसिंग के प्रशिक्षक नत्थू प्रसाद कुशवाहा उपस्थित रहे।

मातृ एवं किशोरी सम्मेलन में ग्रामीण महिलाओं को किया गया जागरूक

गर्भस्थ शिशु संस्कार एवं विद्यारंभ संस्कार का हुआ आयोजन, किशोरियों के स्वास्थ्य सुरक्षा तथा पोषण पर हुई चर्चा

चित्रकूट/ दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा ग्राम पंचायत टेढ़ी पतवनिया गोदावरी एवं ग्राम पंचायत पैकोंरा में मातृ एवं किशोरी सम्मेलन संपन्न हुआ। इसमें श्रीमती संगीता जैन सामाजिक कार्यकर्ता चित्रकूट मुख्य अतिथि के रूप में रही, श्रीमती सीमा पांडेय प्रभारी समाज शिल्पी दंपति तथा शालिनी शुक्ला संकुल प्रभारी के अलावा आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, एएनएम तथा ग्राम प्रधान श्री नरेंद्र पटेल के अलावा गांव के सर्वमान्य व्यक्ति तथा महिलाएं उपस्थित रहीं। ग्राम पंचायत पैकोंरा में मातृ एवं किशोरी सम्मेलन में गर्भस्थ शिशु संस्कार एवं विद्यारंभ संस्कार भी इसमें संपन्न हुआ, इसमें श्रीमती बबीता सिंह, श्रीमती श्रद्धा मालवीय, श्रीमती बादमिया देवी, श्रीमती रचना अग्रहरी आदि प्रमुख महिलाओं का मार्गदर्शन मिला।

सम्मेलन में किशोरियों के स्वास्थ्य सुरक्षा तथा पोषण के संदर्भ में विभिन्न सत्रों का आयोजन किया गया। किशोरियों में होने वाली व्यवहारिक कठिनाई पर चर्चा हुई, किशोरियों की बढ़ती उम्र में होने वाली कठिनाई के समाधान हेतु जागरूक किया गया।

इस कार्यक्रम का आयोजन किशोरी एवं महिला मंडल द्वारा किया गया। जिसमें कुमारी रूपाली किशोरी दीदी ने संचालन किया और फूल कुमारी, रेखा देवी, चंद्रकली तीन गर्भवती माता का गर्भस्थ शिशु संस्कार कार्यक्रम भी किया गया तथा 11 बच्चों का विद्यारंभ संस्कार भी किया गया।

इस अवसर पर श्रीमती संगीता जैन ने कहा कि महिलाओं को आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी बनना चाहिए उसके लिए उन्हें शिक्षित होना बहुत जरूरी है क्योंकि एक महिला पूरे परिवार की दिशा तय करती है। सिलाई सीखी हुई किशोरियों की उन्होंने प्रशंसा की तथा उनका प्रोत्साहित करने के लिए आश्वासन दिया।

समाज शिल्पी दंपत्ति प्रभारी श्रीमती सीमा पांडे ने किशोरियों को स्वच्छ रहने तथा अपने स्वास्थ्य हेतु पोषक तत्वों का उपयोग करने के लिए बताया।

श्रीमती बबीता सिंह ने पीने वाले पानी का रखरखाव, स्वच्छता उपयोग के बारे में बताया। श्रीमती रचना अग्रहरी ने महिला अभिभावकों से आग्रह किया कि अपने बच्चियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दें, उसमें भेदभाव ना करें तथा उन्हें स्कूल में नामांकन हेतु भेजें, पढ़ने हेतु प्रोत्साहित करें, इधर-उधर घरेलू कार्यों में बच्चों को अधिक न लगाएं।

तुलसी कृषि विज्ञान केन्द्र, गनीवां की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक

बैठक में फसल सुरक्षा, कृषि विविधीकरण तथा नवीन कृषि तकनीकों के प्रभावी प्रसार पर दिया गया विशेष जोर

चित्रकूट/ दीनदयाल शोध संस्थान अंतर्गत तुलसी कृषि विज्ञान केन्द्र, गनीवां, चित्रकूट में वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। कार्यक्रम का शुभारंभ दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन एवं अन्य अतिथियों द्वारा भारत माता, पंडित दीनदयाल उपाध्याय तथा भारत रत्न राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख के चित्रों के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन एवं पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया।

बैठक में उपस्थित माननीय सदस्यों के समक्ष केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र सिंह नेगी द्वारा गत वर्ष में केन्द्र द्वारा संचालित गतिविधियों एवं उपलब्धियों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया। इसके उपरांत वर्ष 2025 की प्रगति आख्या एवं वर्ष 2026 की कार्ययोजना का वैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तुतीकरण किया गया।

कार्ययोजना प्रस्तुतीकरण के पश्चात उपस्थित विशेषज्ञों एवं अतिथियों द्वारा विभिन्न महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए। प्रमुख रूप से फसल सुरक्षा, कृषि विविधीकरण, हरे चारे की उपलब्धता, मशरूम उत्पादन, औषधीय पौधों की खेती, पशुपालन तथा नवीन कृषि तकनीकों के प्रभावी प्रसार पर विशेष बल दिया गया।

महात्मा गांधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट के अधिष्ठाता डॉ. देव प्रभाकर राय ने मोबाइल

आधारित कृषि परामर्श सेवाओं को किसानों तक पहुँचाने एवं यूट्यूब जैसे माध्यमों द्वारा सफल कृषक कहानियों के प्रसार पर जोर दिया। साथ ही उन्होंने किसानों के यहाँ पोषण वाटिकाओं की स्थापना को बढ़ावा देने का सुझाव दिया।

बांदा कृषि विश्वविद्यालय के सहायक निदेशक (प्रसार) डॉ. मयंक दुबे ने पशुपालन से जुड़े पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण एवं उपयोग तथा "चारा कैफेटेरिया" की स्थापना पर बल दिया। डॉ. बी.के. गुप्ता ने कृषि विविधीकरण को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर जोर दिया। सह प्राध्यापक डॉ. सुभाष चन्द्र सिंह ने किन्नू, खजूर एवं मौसमी जैसे फलदार बागों की स्थापना एवं पुराने बागों के पुनर्जीवन हेतु प्रयास करने की सलाह दी तथा बुंदेलखंड के पारंपरिक फलदार पौधों के रोपण पर विशेष ध्यान देने को कहा।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्री अभय महाजन ने भूमिहीन किसानों को रोजगार से जोड़ने, बहुवर्षीय चारा फसलों के रोपण को बढ़ावा देने तथा समिति में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने पर विशेष निर्देश दिए।

कार्यक्रम में प्रो. देव प्रभाकर राय, डॉ. सुभाष चन्द्र सिंह, डॉ. बी.के. गुप्ता, डॉ. मयंक दुबे, जिला कृषि अधिकारी, सहायक अभियंता (सिंचाई), क्षेत्रीय अधिकारी (इफको), सहायक निदेशक (सहकारिता), भूमि संरक्षण विभाग, मत्स्य निरीक्षक, डॉ. नवीन शर्मा (वरिष्ठ वैज्ञानिक), श्री अनिल कुमार सिंह (निदेशक, जन शिक्षण संस्थान), कृषक उत्पादन संगठन (कर्वी एवं नदिनकुरमियान) के प्रतिनिधि, प्रगतिशील किसान एवं अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में केन्द्र के समस्त वैज्ञानिक एवं कर्मचारी भी उपस्थित रहे। बैठक से पूर्व उत्तर प्रदेश को एक ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने में कृषि एवं उससे जुड़े विभागों की भूमिका पर एक परिचर्चा आयोजित की गई, जिसमें डॉ. नेगी द्वारा विस्तृत प्रस्तुतीकरण दिया गया।

अंत में केन्द्र द्वारा सभी उपस्थित अतिथियों एवं सदस्यों का आभार व्यक्त किया गया तथा शांति मंत्र के साथ बैठक का समापन हुआ।

दीनदयाल शोध संस्थान के प्रकल्पों में मनाई गई बाबा साहेब की 135वीं जन्म जयंती

चित्रकूट/ दीनदयाल शोध संस्थान के आरोग्यधाम सभागार में डॉ. भीमराव अंबेडकर की 135वीं जन्म जयंती मनाई गई। इसके अलावा पद्म विभूषण से सम्मानित सुप्रसिद्ध गायिका आशा भोसले को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन, सचिव अपराजित शुक्ला, डॉ. ओमप्रकाश सोनी एवं सभी प्रकल्पों के प्रभारी सहित प्रमुख कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आशा जी का संगीत अमर है और उनकी आवाज हमेशा लोगों के दिलों में गूंजती रहेगी। उनकी गायकी ने हर पीढ़ी को प्रभावित किया है और आगे भी करती रहेगी। सभागार में मौजूद लोगों ने दो मिनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि दी और उनके अमूल्य योगदान को स्मरण किया।

बाबा साहेब की जयंती पर बोलते हुए श्री महाजन ने कहा कि डॉ. बाबा साहेब की सामाजिक समानता, न्याय और ज्ञान का प्रतीक है। यह दिवस अंतिम पंक्ति पर खड़े लोगों के अधिकारों, शिक्षा के महत्व और जाति-मुक्त समाज के उनके दृष्टिकोण को याद करने और भारतीय लोकतंत्र को मजबूत बनाने के लिए समर्पित है। यह दिवस सामाजिक समरसता का संदेश देता है साथ ही समाज में समानता, बंधुत्व और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों को बढ़ावा देता है। हम सभी बाबा साहेब के मूलमंत्र "शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो" के माध्यम से शिक्षा के प्रति जागरूकता फैलाएं।

राष्ट्रऋषि नानाजी सदैव संगठित, सामाजिक समानता, बंधुत्व और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों की बात करते थे एवं दीनदयाल शोध संस्थान भी इन्हीं उद्देश्यों के साथ कार्य कर रहा है। वहीं एक अन्य कार्यक्रम कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय द्वारा वित्तपोषित तथा दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा संचालित जन शिक्षण संस्थान द्वारा संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती परमानन्द आश्रम पद्धति विद्यालय गनीवां में मनाई गई।

जिसमें विद्यालय के प्रमुख श्री संतोष कुशवाह, जन शिक्षण संस्थान के परियोजना समन्वयक बनारसी लाल पाण्डे, प्रभाकर मिश्रा, जन्मजेय पांडेय सहित विद्यालय के बच्चों की सहभागिता रही। कृष्णा देवी वनवासी बालिका आवासीय विद्यालय मझगवां, रामनाथ आश्रम शाला विद्यालय पीली कोठी, कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवां व गनीवां सहित संस्थान के सभी प्रकल्पों में भी डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती मनाई गई।

सुरेंद्रपाल ग्रामोदय विद्यालय चित्रकूट की कक्षा 12वीं की छात्रा नंदिनी गर्ग ने वाणिज्य संकाय में प्रदेश की प्रवीणता सूची में छठवां स्थान प्राप्त कर विद्यालय को किया गौरवान्वित

बारहवीं में अभि मिश्रा, निधि राजपूत, अंस बागरी, ऋषिता पांडे और हाईस्कूल परीक्षा में गौरी बागरी, प्राची सेन एवं आरती कुशवाहा ने किया उत्कृष्ट प्रदर्शन

चित्रकूट/ दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा संचालित सुरेंद्रपाल ग्रामोदय विद्यालय, चित्रकूट ने एक बार फिर अपने उत्कृष्ट शैक्षिक परिणामों से क्षेत्र का मान बढ़ाया है। माध्यमिक शिक्षा मंडल, मध्य प्रदेश, भोपाल द्वारा घोषित हाईस्कूल एवं हायर सेकेंड्री परीक्षा परिणामों में विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने उल्लेखनीय सफलता अर्जित की है। कक्षा 12वीं की छात्रा नंदिनी गर्ग ने प्रदेश की प्रवीणता सूची में छठवां स्थान प्राप्त कर विद्यालय को गौरवान्वित किया है।

विद्यालय का समग्र परीक्षा परिणाम अत्यंत श्रेष्ठ रहा। मानविकी संकाय में अभि मिश्रा, विज्ञान संकाय में निधि राजपूत, कृषि संकाय में अंश बागरी तथा वाणिज्य संकाय में नंदिनी गर्ग ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। ऋषिता पांडे ने भी 95% अंक प्राप्त किया। वहीं हाईस्कूल परीक्षा में गौरी बागरी ने 92 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान हासिल किया, जबकि प्राची सेन एवं आरती कुशवाहा ने भी उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

इस गौरवपूर्ण उपलब्धि पर दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने छात्र-छात्राओं एवं विद्यालय परिवार को शुभकामनाएं दीं। विद्यालय के प्राचार्य जितेंद्र श्रीवास्तव एवं परीक्षा प्रभारी अशोक दीक्षित ने भी सभी सफल विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

विद्यालय के प्राचार्य श्री जितेंद्र श्रीवास्तव ने बताया कि उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम प्राप्त हो इसके लिये वर्ष पर्यन्त एक व्यवस्थित शिक्षण प्रणाली को योजनाबद्ध तरीके से अपनाया जाता है। उत्कृष्ट शैक्षणिक प्रबंधन, शिक्षकों की मेहनत तथा छात्रों के परिश्रम और अभिभावकों के सहयोग के प्रतिफल के रूप में ऐसा उत्साहजनक परीक्षा परिणाम प्राप्त हुआ।

उल्लेखनीय है कि यह विद्यालय विगत 35 वर्षों से शिक्षा के साथ-साथ संस्कार, स्वास्थ्य एवं स्वावलंबन के क्षेत्र में नानाजी देशमुख के आदर्शों को साकार करते हुए समाज में प्रेरणास्रोत बना हुआ है। विद्यालय की इस सफलता से पूरे संस्थान में हर्ष का वातावरण व्याप्त है।

अभि मिश्रा

निधि राजपूत

अंश बागरी

नंदिनी गर्ग

ऋषिता पांडे

गौरी बागरी

ग्राम नकैला में ग्रीष्मकालीन पोषकीय गृह वाटिका एवं भूमि सुपोषण पर प्रशिक्षण आयोजित

"हर घर पोषण–हर घर हरियाली" की दिशा में ग्रीष्म कालीन सब्जी बीज का किया गया वितरण

मझगवां/ दीनदयाल शोध संस्थान कृषि विज्ञान केंद्र, मझगवां, सतना द्वारा ग्राम नकैला में ग्रीष्मकालीन पोषकीय गृह वाटिका एवं भूमि सुपोषण विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में लगभग 30 किसानों एवं महिलाओं ने सक्रिय सहभागिता की। प्रशिक्षण के दौरान खाद्य प्रसंस्करण वैज्ञानिक डॉ. हेमराज द्विवेदी ने गृह वाटिका के माध्यम से वर्षभर पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के उपायों पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सीमित भूमि एवं संसाधनों में भी हरी सब्जियों एवं पोषक फसलों का उत्पादन कर परिवार के स्वास्थ्य में सुधार किया जा सकता है। साथ ही, उन्होंने सब्जियों के संरक्षण एवं मूल्य संवर्धन की तकनीकों पर भी प्रकाश डाला।

पोषकीय गृह वाटिका (घर के आसपास छोटी सब्जी/फल बाड़ी) आज के समय में परिवार की स्वास्थ्य सुरक्षा और आत्मनिर्भरता का एक सरल व प्रभावी माध्यम है जो पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करती है और स्वास्थ्य में सुधार, आर्थिक बचत और अतिरिक्त आय, सालभर उपलब्धता, महिलाओं की भागीदारी और सशक्तिकरण, सीमित जगह में उत्पादन का आधार है।

पोषकीय गृह वाटिका न केवल परिवार को स्वस्थ बनाती है, बल्कि आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय रूप से भी लाभकारी है। यह "हर घर पोषण, हर घर हरियाली" की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस दौरान पोषण वाटिका किट में भारतीय बागवानी

अनुसंधान संस्थान बैंगलोर से आई ग्रीष्म कालीन सब्जी बीज का वितरण भी किया गया। वहीं, मृदा वैज्ञानिक डॉ. अशोक शर्मा ने भूमि की उर्वरता बनाए रखने एवं बढ़ाने के लिए संतुलित पोषण प्रबंधन, जैविक खादों के उपयोग एवं मृदा परीक्षण के महत्व को समझाया। उन्होंने किसानों को रासायनिक उर्वरकों के संतुलित उपयोग तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति जागरूक किया।

कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को व्यावहारिक जानकारी के साथ-साथ विभिन्न तकनीकों का प्रदर्शन भी किया गया। किसानों एवं महिलाओं ने प्रशिक्षण को उपयोगी बताते हुए इसे अपने दैनिक कृषि कार्यों में अपनाने की बात कही। कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागियों का आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में इस प्रकार के और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने की जानकारी दी गई। कार्यक्रम मे दीनदयाल शोध संस्थान के समाज शिल्पी कार्यकर्ता उदय यादव का विशेष सहयोग रहा।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा टिकाऊ खेती हेतु संतुलित उर्वरक प्रयोग हेतु जागरूकता अभियान का व्यापक आयोजन

45 दिनों तक कृषि वैज्ञानिक ने विभिन्न ग्रामों में प्रशिक्षण, संगोष्ठी एवं संवाद के जरिये कृषकों को किया जागरूक

चित्रकूट/ दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र, गनीवां, चित्रकूट द्वारा "फसलों में संतुलित उर्वरक प्रयोग जागरूकता कार्यक्रम" के तहत विभिन्न ग्रामों में व्यापक गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को संतुलित मात्रा में उर्वरको का उपयोग, मृदा स्वास्थ्य पर जरूरत से ज्यादा मात्रा में रासायनिक उर्वरकों से धरती माता, हमारे स्वास्थ्य एवं पर्यावरण को होने वाले नुकसान के प्रति जागरूक करना है।

कृषि विज्ञान केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. आर. एस. नेगी ने बताया कि 23 अप्रैल 2026 से इस अभियान की शुरुआत की गई, जिसमें 45 दिन तक केंद्र के वैज्ञानिक चित्रकूट जिले के सभी विकास खंडों के विभिन्न ग्रामों में जागरूकता कार्यक्रम, प्रशिक्षण, संगोष्ठी एवं संवाद कार्यक्रमों के आयोजन के जरिए किसानों को फसलों में संतुलित मात्रा में उर्वरकों के उपयोग करने की जानकारी उपलब्ध कराए।

इन कार्यक्रमों में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों द्वारा किसानों को उर्वरकों के संतुलित प्रयोग, मृदा परीक्षण, जैविक एवं रासायनिक उर्वरकों के समन्वित उपयोग तथा फसलों में कम रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग कर गुणवत्ता युक्त अधिक उपज लेने की सभी नवाचार तकनीकों की जानकारी प्रदान की गई। इस अभियान के दौरान केंद्र के वैज्ञानिक कृषकों के खेत से मिट्टी के नमूने भी एकत्रित किए ताकि प्रयोगशाला में जांच के पश्चात कृषकों को फसलों में प्रयोग किए जाने वाले उर्वरकों की सही मात्रा की जानकारी उपलब्ध कराई जा सके।

कार्यक्रमों में स्थानीय सहयोगियों का भी सक्रिय योगदान रहा, जिसमें अन्य कार्यकर्ता भी शामिल रहे। कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिकारियों ने बताया कि इस अभियान से क्षेत्र के किसानों को उर्वरकों के सही उपयोग की जानकारी मिली, जिससे लागत में कमी, उत्पादन में वृद्धि तथा मृदा की गुणवत्ता में सुधार संभव होगा।

माँ मंदाकिनी के निर्मल, अविरल प्रवाह हेतु आरोग्यधाम में दो दिवसीय विचार-विमर्श बैठक-सह-कार्यशाला आयोजित

'नदी पुनरुद्धार, सीवेज प्रबंधन और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिए क्षेत्र सर्वेक्षण के बाद विशेषज्ञों ने रखे सुझाव

विशेषज्ञों ने एकीकृत और बहु–क्षेत्रीय दृष्टिकोण की आवश्यकता पर दिया जोर

चित्रकूट/ दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा माँ मंदाकिनी के अविरल, निर्मल प्रवाह, सीवेज प्रबंधन एवं पारिस्थितिक पुनर्स्थापन पर 25-26 अप्रैल को आरोग्यधाम सभागार में दो दिवसीय विचार-विमर्श बैठक-सह-कार्यशाला एवं क्षेत्र भ्रमण का आयोजन किया गया। जिसमें आईआईटी, केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन, प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों के विशेषज्ञों तथा विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों की सहभागिता रही।

कार्यशाला का शुभारंभ दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन के स्वागत उद्बोधन के साथ हुआ। जिसमें उन्होंने कहा कि चित्रकूट के मूल स्वरूप को बनाये रखते हुए इसके विकास हेतु जनता की पहल एवं पुरूषार्थ तथा शासकीय व सामाजिक संगठनों के सामूहिक प्रयत्न से बेहतर बनाना है।

इस कार्यशाला में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड भोपाल के निदेशक डॉ. अजीत कुमार विद्यार्थी, प्रसिद्ध पर्यावरणविद एवं परिस्थितिकीविद प्रो. सीआर बाबू दिल्ली विश्वविद्यालय, डॉ. अनूप चतुर्वेदी वैज्ञानिक एवं रूपेंद्र कुमार वैज्ञानिक केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड भोपाल, डॉ. फैयाज अहमद खुदसर वैज्ञानिक यमुना डायवर्सिटी पार्क, कमल तिवारी मैनेजिंग डायरेक्टर/ सीईओ डायकी एक्सेस प्राइवेट लिमिटेड, प्रो ए ए काजमी आईआईटी रुड़की, डॉ. प्रवीण कुमार निदेशक गंगा मिशन, वितुष लूथरा सेंट्रल पब्लिक हेल्थ एंड एनवायरनमेंट इंजीनियरिंग संगठन, सतीश मेहता आईआईटी एल्यूमिनी सोशल फंड, आर श्रीनिवासन आईआईटी, प्रो एसपी गौतम पूर्व अध्यक्ष केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, जल पुरुष पद्मश्री उमाशंकर पांडे, अजय शर्मा जे के सीमेंट पन्ना यूनिट, श्री रत्नेश श्रीवास्तव अल्ट्राटेक सीमेंट आदित्य बिरला ग्रुप भोपाल, शैलेंद्र शुक्ला चीफ इंजीनियर मध्य प्रदेश अर्बन डेवलपमेंट

डिपार्टमेंट भोपाल, सीताराम टैगोर कंसल्टेंट ई पी सी ओ भोपाल, डॉ. सुधा सिंह लिमिनोलॉजिस्ट ईपीसीओ, प्रभात झा इंजीनियर ईपीसीओ, सुधांशु तिवारी क्षेत्रीय अधिकारी एमपीपीसीबी सतना, विपिन कुमार मिश्रा वैज्ञानिक केंद्रीय भूजल बोर्ड राज्य इकाई प्रयागराज, सत्येंद्र चौहान डिक्सी एक्सिस इंडिया प्रा.लि., अंकित सोनी मुख्य नगरपरिषद अधिकारी, अभय महाजन संगठन सचिव दीनदयाल शोध संस्थान, वसंत पंडित कोषाध्यक्ष दीनदयाल शोध संस्थान आदि प्रमुख उपस्थित रहे।

डीआरआई के कोषाध्यक्ष वसंत पंडित ने कहा कि चित्रकूट, जो कि मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश की सीमा पर स्थित एक अत्यंत महत्वपूर्ण सांस्कृतिक एवं पारिस्थितिक क्षेत्र है, अपनी जीवनरेखा माँ मंदाकिनी नदी के लिए प्रसिद्ध है। विगत कुछ वर्षों में इस क्षेत्र का पर्यावरणीय संतुलन तथा नदी की पारिस्थितिकी बढ़ते मानवजनित दबाव एवं आवर्ती मौसमी बाढ़ के कारण प्रभावित हुई है। इन चुनौतियों के समाधान हेतु एक समन्वित, बहु-क्षेत्रीय एवं कार्यान्वयन-उन्मुख दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

माँ मंदाकिनी के निर्मल (प्रदूषण मुक्त) और अविरल (निरंतर प्रवाह) स्वरूप को बनाए रखने के लिए एकीकृत और बहु-क्षेत्रीय दृष्टिकोण की आवश्यकता है। जिसके अंतर्गत तकनीकी, पारिस्थितिक और सामाजिक भागीदारी शामिल है। इसके लिए दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा सीवेज प्रबंधन एवं पारिस्थितिक पुनर्स्थापन पर दो दिवसीय विचार-विमर्श बैठक-सह-कार्यशाला एवं क्षेत्र भ्रमण का आयोजन किया गया, जिसका समापन आरोग्यधाम के सभागार में हुआ।

कार्यशाला के समापन सत्र में प्रसिद्ध पर्यावरणविद एवं परिस्थिकिविद

प्रो सी आर बाबू ने अपने महत्वपूर्ण सुझाव रखे तो वही केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड भोपाल के निदेशक डॉ. ए के विद्यार्थी ने तीनों टीमों के विचारों का प्रस्तुतिकरण किया। इस दौरान सभी टीमों के सदस्यों द्वारा महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए। सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव अभय महाजन द्वारा किया गया और कोषाध्यक्ष वसंत पंडित द्वारा अथितियों व विशेषज्ञों को मोमेंटो प्रदान किये गए।

क्षेत्र सर्वेक्षण के लिए तीन टीमों जिसमें पहली 'नदी पुनरुद्धार व वाटरशेड प्रबंधन और जैव विविधता का पुनर्जीवन और संरक्षण', दूसरी टीम द्वारा सीवेज प्रबंधन, और तीसरी टीम द्वारा ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के संदर्भ में फील्ड सर्वेक्षण किया। जिसके आधार पर विशेषज्ञों ने बताया कि माँ मन्दाकिनी को निर्मल (स्वच्छ) बनाने के लिए सीवेज और अपशिष्ट को उपचारित करना, प्लास्टिक और कचरे का प्रबंधन, नदियों में प्लास्टिक, शव, पूजा सामग्री और ठोस कचरा फेंकने पर सख्ती से रोक लगानी होगी। साथ ही प्राकृतिक कृषि को प्रोत्साहन देना होगा, फ्लोटिंग वेटलैंड्स जो पानी के ऊपर तैरते हुए कृत्रिम वेटलैंड्स का उपयोग करना होगा जो पोषक तत्वों और प्रदूषकों को सोखकर पानी को शुद्ध करते हैं। जैविक उपचार से प्रदूषित जल के उपचार के लिए पर्यावरण के अनुकूल एंजाइमों का उपयोग करना होगा।

कार्यशाला के समापन सत्र में एक्सपर्ट ने बताया कि नदियों को अविरल व निरंतर प्रवाह बनाए रखने के लिए नदी के जलग्रहण क्षेत्रों को पुनर्जीवित करना होगा, जिससे पानी की निरंतर आपूर्ति बनी रहे। नदी के किनारों पर सघन वृक्षारोपण को बढ़ावा देना होगा, जो न केवल मृदा कटाव को रोकते हैं बल्कि जल स्तर को बनाए रखने में भी सहायक हैं। नदियों के आस पास तालाबों और जलाशयों का अधिक मात्रा में निर्माण करना होगा ताकि वर्षा जल सीधे नदी में जाकर जल स्तर बढ़ा सके। नदियों के किनारे कूप नलिका बनाकर धरती की ऊपरी परत के पानी को अंदरूनी जल व्यवस्था में जमा करना सुनिश्चित करना होगा, साथ ही हमें अन्य महत्वपूर्ण कदम उठाने होंगे जिसके अंतर्गत स्थानीय समुदायों, ग्राम पंचायतों, स्कूल, कालेज में नदियों की सफाई के प्रति जागरूक करना और उन्हें सक्रिय रूप से सफाई अभियानों में शामिल करना।

नदियों को "जीवित इकाई" मानकर कड़ाई से कानूनी संरक्षण प्रदान करना होगा, साथ ही नदी के बहाव क्षेत्र को अतिक्रमण मुक्त करना, सहायक नदी - नालों को पुनर्जीवित करना एवं उनका सीमांकन करना होगा। माँ मन्दाकिनी को अविरल-निर्मल बनाये रखने के लिए गठित तीनों समूह अपनी-अपनी रिपोर्ट्स 1 माह के अंदर कमेटी को देंगें जिससे एक समन्वित कार्य योजना बनाकर उसका पालन करना सुनिश्चित किया जा सके।

सीवेज प्रबंधन एवं पारिस्थितिक पुनर्स्थापन के लिए विशेषज्ञों द्वारा किये गये क्षेत्र सर्वेक्षण के दौरान दिये गये सुझाव

केन्द्रीय भूजल बोर्ड भोपाल और लखनऊ द्वारा क्षेत्र का जल-भूवैज्ञानिक अध्ययन, क्षेत्र का ड्रोन सर्वेक्षण, मौजूदा घास के मैदानों, तालाबों, रिचार्ज पिट्स, चेक डैम, बांधों आदि की सूची तैयार करना, एक प्रशिक्षण और निगरानी इकाई (सेल) का गठन, स्थानीय प्रजातियों के पौधों की नर्सरी तैयार करना, 'जल गंगा संवर्धन अभियान' के तहत वाटरशेड प्रबंधन के लिए बुनियादी ढांचे का विकास करना, उपचारित (ट्रीटेड) पानी का पुनः उपयोग, आश्रमों / होटलों को मुख्य सीवर नेटवर्क से जोड़ना या विकेंद्रीकृत सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट स्थापित करना, खुले में शौच को हतोत्साहित करने के लिए उपचार प्रणाली (ट्रीटमेंट सिस्टम) से युक्त शौचालय ब्लॉक बनाना, SBR-आधारित STP के चालू होने तक, गाद निकालने (desilting) के बाद 'स्टेबिलाइज़ेशन तालाबों' का उपयोग करना, अमावस्या के दौरान तीर्थयात्रियों के सीवेज के प्रबंधन के लिए एक प्रणाली तैयार करना, सेप्टिक टैंक / घरेलू अपशिष्ट जल (sullage) का प्रबंधन, तीर्थयात्रियों के लिए आधुनिक शौचालयों की व्यवस्था / DRDO मॉडल / ड्राई मॉडल / HUL द्वारा सुविधा मॉडल, ट्रैश बूम (कचरा रोकने वाला बैरियर), सिविल निगरानी समिति, बाढ़ की गंभीरता को झेलने के लिए सीवर नेटवर्क की जाँच करना, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, कचरे के उचित संग्रह, पृथक्करण, परिवहन और प्रसंस्करण का मुद्दा, CSR के तहत गीले कचरे और सूखे कचरे का प्रसंस्करण।

चित्रकूट में प्रबुद्ध जन गोष्ठी में भारत को पुनः 'विश्व गुरु' बनाने पर मंथन

गोष्ठी में भैयाजी जोशी ने संघ की सौ वर्ष की यात्रा का संक्षिप्त विवरण किया प्रस्तुत

चित्रकूट। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल के सदस्य श्री सुरेश जोशी उपाख्य भैया जी जोशी ने चित्रकूट में आयोजित प्रबुद्ध जन गोष्ठी में सहभागिता करते हुए उपस्थित प्रमुख नागरिकों से एक महत्वपूर्ण प्रश्न रखा कि "आप लोगों के विचार से भारत के पास ऐसा क्या है, जिसे वह विश्व के अन्य देशों को प्रदान कर पुनः 'विश्व गुरु' के रूप में स्थापित हो सकता है?"

यह जनसंवाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मझगवां खंड सतना द्वारा लोहिया सभागार उद्यमिता विद्यापीठ, दीनदयाल शोध संस्थान, चित्रकूट में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मझगवां खंड के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े प्रबुद्धजनों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

अपने मार्गदर्शक उद्बोधन में भैयाजी जोशी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सौ वर्ष की यात्रा का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करते हुए उसके मूल उद्देश्यों और कार्यपद्धति पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि संघ का मूल ध्येय समाज में नैतिक मूल्यों का संवर्धन, राष्ट्रीय एकता का सुदृढ़ीकरण तथा आत्मनिर्भर और सशक्त भारत का निर्माण है।

उन्होंने भारत की वैश्विक भूमिका पर विचार रखते हुए अरविंद घोष, स्वामी विवेकानंद एवं वीर सावरकर के दृष्टिकोण का उल्लेख किया। उनके अनुसार इन महान विचारकों ने भारत की आध्यात्मिक चेतना, सांस्कृतिक समृद्धि और मानवता के कल्याण के सिद्धांत को विश्व के लिए मार्गदर्शक माना है।

भैयाजी जोशी ने कहा कि भारत की आत्मा 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' के भाव में निहित है, जो विश्व को शांति, सह-अस्तित्व और समरसता का संदेश देता है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यदि भारतीय समाज अपने

मूल्यों, परंपराओं और कर्तव्यबोध को आत्मसात कर ले, तो भारत पुनः विश्व मंच पर नेतृत्वकारी भूमिका निभा सकता है।

उन्होंने देश के उत्थान और पतन में समाज की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि हिन्दू समाज की एकता, सजगता और सक्रियता ही राष्ट्र निर्माण का आधार है। संघ द्वारा किए जा रहे विभिन्न सेवा, शिक्षा और सामाजिक समरसता के कार्यों का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि ये प्रयास समाज को संगठित और सशक्त बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

कार्यक्रम के दौरान उपस्थित प्रबुद्धजनों ने भी अपने विचार साझा किए और भारत की सांस्कृतिक विरासत, योग, आयुर्वेद, आध्यात्मिक ज्ञान एवं पारिवारिक मूल्यों को विश्व के लिए उपयोगी बताते हुए इसे भारत की विशिष्ट पहचान के रूप में प्रस्तुत किया। इस अवसर पर जिला संघ चालक सतना राम बेटा कुशवाहा भी मंचासीन रहे।

अंत में आयोजकों द्वारा आभार ज्ञापित किया गया तथा राष्ट्र निर्माण के इस वैचारिक विमर्श को समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुंचाने का संकल्प लिया गया। गोष्ठी में दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन सहित संत समाज, नगर के प्रमुख महिला-पुरुष गणमान्यजन, ग्रामोदय विश्वविद्यालय के प्राध्यापक जन आदि बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

ग्राम कहेटा माफी के बलिया पुरवा में भूमि सुपोषण कार्यक्रम का आयोजन

किसानों द्वारा खेतों से कलश में मिट्टी भरकर विधिवत पूजन के उपरांत मिट्टी का खेतों में किया गया छिड़काव

चित्रकूट/ भारतीय कृषि चिंतन में भूमि को धरती माता ऐसे संबोधित किया है। हमारे प्राचीन ग्रंथो में इसके उदाहरण सहजता से पाए जाते है। अथर्ववेद के भूमि सूक्त मे कहा गया है, 'माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।' इसका भावार्थ है कि भूमि हमारी माता है एवं हम उस के पुत्र। तात्पर्य, भूमि के पोषण की व्यवस्था करना हमारा कर्तव्य है। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा ग्रामों में भूमि सुपोषण और उसके संरक्षण को लेकर लगातार कार्यक्रम किये जा रहे हैं।

चित्रकूट जनपद के कहेटा माफी के बलिया पुरवा में भूमि सुपोषण एवं संरक्षण कार्यक्रम का आयोजन समाज शिल्पी दंपत्ति एवं ग्राम वासियों के सहयोग से किया गया। जिसमें ग्राम बलिया पुरवा के कृषकों एवं महिलाओं द्वारा अपने-अपने खेतों से कलश में मिट्टी भरकर कार्यक्रम स्थल तक लाया गया और वहां उनका विधिवत पूजन कार्यक्रम संपन्न हुआ। पूजन के उपरांत उस मिट्टी का अपने-अपने खेतों में छिड़काव किया गया। भूमि की उर्वरा शक्ति कैसे बनाएं रखी जाए तथा उसको प्रदूषित न किया जाए इस संदर्भ में ग्राम वासियों को बताया गया। इस अवसर पर श्रद्धा पर्व के माध्यम से बुजुर्गों को भी सम्मानित किया गया। उनके अनुभव गांव, समाज को लाभ पहुंचाते है। इस कार्यक्रम में चार पीढ़ी के बच्चों ने अपने बड़े बुजुर्गों का पूजन किया तथा उनके आशीर्वाद लिए व उनके बताए रास्ते पर चलने का संकल्प भी लिया।

दीनदयाल शोध संस्थान के स्वावलंबन अभियान के प्रभारी डॉ. अशोक पांडेय ने बताया कि समाज शिल्पी दंपति एवं संस्थान के कार्यकर्ता ग्राम स्तर तक जाकर इस कार्यक्रम में ग्रामीणों की सहभागिता सुनिश्चित कर रहे हैं। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य भारतीय कृषि चिंतन, भूमि सुपोषण एवं संरक्षण इन संकल्पनाओं को कृषि क्षेत्र में पुनःस्थापित करना है। जन अभियान में प्राधान्यतः भूमि सुपोषण, जन जागरण एवं भारतीय कृषि चिंतन एवं भूमि सुपोषण को बढ़ावा देने संबंधित कार्यक्रम किए जा रहे है।

इस कार्यक्रम में दीनदयाल शोध संस्थान के स्वावलंबन अभियान प्रभारी डॉ. अशोक पांडेय एवं श्रीमती सीमा पांडेय, श्री मनोज त्रिपाठी एवं श्रीमती पदमा त्रिपाठी संकुल प्रभारी उपस्थित रहे। गांव के गणमान्य लोगों में गया प्रसाद यादव, चंदन यादव, शत्रुघ्न यादव, श्रीमती मंजू सिंह व नाथू यादव उपस्थित रहे। समाज शिल्पी दंपति देवेंद्र पयासी, प्रिया पयासी के साथ बड़ी संख्या में किशोरी बच्चियों एवं बच्चे तथा गांव के लोग उपस्थित रहे।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा ग्रामों में 'संतुलित उर्वरक उपयोग जागरूकता अभियान अंतर्गत किसान गोष्ठी आयोजित

वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को उर्वरकों के संतुलित उपयोग और मृदा नमूना लेने की विधि के बारे में किया जा रहा जागरूक

मझगवां/ दीनदयाल शोध संस्थान, कृषि विज्ञान केंद्र, मझगवां द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के तत्वावधान में किसानों के लिए "संतुलित उर्वरक उपयोग अभियान" का आयोजन प्रतिदिन किया जा रहा है। अभियान के अंतर्गत सोहवाल विकासखंड के ग्राम गुलुआ एवं मझगवां जनपद के ग्राम बांका, चितहरा में किसान गोष्ठी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग को रोकना और मृदा स्वास्थ्य के प्रति किसानों को जागरूक करना था।

इस कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र के सस्य विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. अजय चौरसिया द्वारा बताया कि किसान भाईयों को मृदा परीक्षण आधारित उर्वरकों का उपयोग किया जाना चाहिए। नाइट्रोजन (यूरिया) पर पूरी तरह निर्भर न रहकर N:P:K (नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश) और सूक्ष्म पोषक तत्वों का उचित अनुपात में प्रयोग करें। इसके लिए रासायनिक उर्वरकों के साथ-साथ गोबर की खाद, हरी खाद, वर्मी कंपोस्ट आदि का भी समावेश करना चाहिए। केन्द्र के कृषि प्रसार विशेषज्ञ श्री पंकज शर्मा ने किसानों को जैविक एवं प्राकृतिक खेती करने की सलाह दी।

इस अभियान में कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक ने किसानों को उर्वरकों के संतुलित उपयोग और मृदा नमूना लेने की विधि के बारे में जानकारी दी। उन्होंने उर्वरकों के अत्यधिक इस्तेमाल से होने वाले नुकसान, जैसे खेत की उर्वरा शक्ति में कमी, स्वास्थ्य पर बुरा असर और खेती की लागत बढ़ने के बारे में भी जागरूक किया। ग्राम चितहरा में आयोजित कार्यक्रम में कृषि वैज्ञानिक सत्यम चौरिहा ने किसानों को समय-समय पर मिट्टी की जांच कराने, मिट्टी का नमूना लेने और जांच के परिणामों के आधार पर ही आवश्यक तत्वों वाले उर्वरकों का प्रयोग करने की सलाह दी। कृषकों ने इस कार्यक्रम सराहना की और कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम होते रहने चाहिए।

चित्रकूटधाम पधारे परमहंस स्वामी श्री अड़गड़ानंद जी महाराज ने डीआरआई के प्रकल्पों का किया भ्रमण

दीनदयाल शोध संस्थान के आरोग्यधाम में संस्थान के कार्यकर्ताओं को दिया आशीर्वचन

चित्रकूट/ यथार्थ गीता के प्रणेता परमपूज्य सदगुरुदेव परमहंस स्वामी श्री अड़गड़ानंद जी महाराज ने अपने चित्रकूट प्रवास के दौरान दीनदयाल शोध संस्थान के आरोग्यधाम परिसर में संस्थान के कार्यकर्ताओं एवं शिष्यों को आशीर्वचन प्रदान करते हुए कहा कि गीता का ज्ञान केवल अर्जुन के लिए नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवमात्र के लिए भी है, जो सांसारिक दुखों से मुक्ति और आध्यात्मिक शांति प्रदान करती है। यूँ तो जीवन में सोचने को तो लाख बातें हैं और न सोचे तो कुछ नही, उनमें पूरी वही होगी जिसे ईश्वर चाहेंगे। गीता को धर्मशास्त्र घोषित किया है तो गीता ही धर्मशास्त्र है सदैव था, आज है और भविष्य में भी रहेगा।

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं,
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं,
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि॥

जीवन में सद्गुरु के बिना कल्याण नही हो सकता इसलिए उसकी पहचान करो फिर अपनाओ कपड़े रंगने से आप भवकूप से पार नही हो सकते हो अर्थात अपनी क्षमता बढ़ाओ।

स्वामी श्री अड़गड़ानंद जी महाराज ने कहा कि दो ढाई अक्षर का छोटा सा नाम ओऊम कहो अथवा राम, किसी भाषा में कह सकते हो। क्योंकि परमात्मा राम ने कहा है कि कोई कुसंस्कार ऐसा नही जो प्रभु चरणों एवं उनकी शरण में जाने से न कट जाए। अर्जुन ने भगवान कृष्ण से पूंछा था कि भगवान कहाँ प्राप्त होंगे भगवान ने उत्तर दिया कि किसी तत्वदर्शी महापुरुष के पास निष्कपट भाव से सेवा करके इसे प्राप्त कर सकते हो क्योंकि वे तत्व का उपदेश करेंगे प्रत्यक्ष साक्षात्कार के साथ मिलने वाली जानकारी का नाम केवल ज्ञान है।

भारत जब-जब अयोग्य हाथों में गया तब तब भारत की आध्यत्मिकता खटाई में पड़ी है। आज देश में जो करोड़ों मुसलमान हैं वो एक भी मुसलमान नही हैं, सनातनी हिन्दू हैं

हमारे सगे भाई हैं। आज वे भूल गए हैं कि उनका घराना यह है। जिस दिन से गीता पा जाओगे उनको भी दे दोगे वे अपना घराना पा जाएंगे। वे जान जाएंगे कि हम पतित कभी नही हुए आप भी जान जाओगे कि ये पतित होने का तरीका नही है। प्रभु में श्रद्धा कदाचित कम हो गई है अर्थात हम वासनाओं में कहीं भटक गए हैं। अविद्या माया बड़ी दुष्ट तथा अत्यंत दुखदायिनी है इस अविद्या माया के कारण ही जीव भव बंधन में पड़ता है। अतः सभी अविद्या का नाश कर सत्य एवं अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानो तथा विश्व कल्याण में युत हो जाओ।

इस अवसर पर दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव अभय महाजन द्वारा संस्थान द्वारा संचालित की जा रही विभिन्न समाजोपयोगी गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराई गई।

स्वामी जी को दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों का भ्रमण कराया गया, जिसमें गुरुकुल संकुल, राम दर्शन, उद्यमिता विद्यापीठ, गौवंश विकास अनुसंधान केन्द्र, दीनदयाल परिसर प्रमुख रहे। भ्रमण के ही अन्तर्गत रामनाथ आश्रमशाला में 24 अप्रैल से 10 मई तक संचालित हो रहे व्यक्तित्व विकास शिविर का भी अवलोकन कराया गया। इस दौरान स्वामी जी शिविर में प्रतिभागी ग्रामीण बच्चों से भी रूबरू हुए और वहाँ की दिनचर्या व विभिन्न विद्याओं में प्रशिक्षण ले रहे बच्चों की गतिविधियों को भी समझा।

पराली प्रबंधन और संतुलित उर्वरक से प्रगतिशील कृषक शिवेंद्र सिंह परिहार ने पेश की टिकाऊ खेती की मिसाल

केवीके वैज्ञानिकों के सुझाव पर पराली बनी पोषण का स्रोत, संतुलित उर्वरक उपयोग से बढ़ी उत्पादकता

मझगवां-सतना/ दीनदयाल शोध संस्थान कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां के मार्गदर्शन में जिला सतना के विकासखंड ऊंचेहरा के ग्राम कुंदहरी निवासी प्रगतिशील कृषक श्री शिवेंद्र सिंह परिहार टिकाऊ खेती के क्षेत्र में एक नई पहचान बना रहे हैं। शिवेंद्र सिंह ने पराली (नरवाई) प्रबंधन और संतुलित उर्वरक उपयोग की वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर न केवल अपनी लागत कम की है, बल्कि मिट्टी की सेहत और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी बड़ा कदम उठाया है।

खेतों में पराली जलाने से होने वाले वायु प्रदूषण और मिट्टी के मित्र कीटों के नुकसान को रोकने के लिए श्री परिहार ने इसका यांत्रिक प्रबंधन शुरू किया है। वे सुपर सीडर हैरो रोटावेटर जैसी मशीनों का उपयोग कर धान और गेहूं की पराली को छोटे टुकड़ों में काटकर मिट्टी में मिला देते हैं। इससे जैविक खाद का निर्माण खेत में गलने-सड़ने के बाद पराली खाद में बदल जाती है, जिससे मिट्टी की गुणवत्ता बढ़ती है। जल धारण क्षमता में वृद्धि होती है भूमि की नमी सोखने की क्षमता में सुधार हुआ है। लागत में कमी और मिट्टी की उर्वरता बढ़ने से रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम हुई है।

केवीके के वैज्ञानिकों के सुझाव पर श्री परिहार ने केवल यूरिया या डीएपी पर निर्भर रहने के बजाय मिट्टी परीक्षण रिपोर्ट के आधार पर संतुलित खाद का उपयोग शुरू किया है। नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश के साथ-साथ सूक्ष्म पोषक तत्वों का उचित समन्वय किया जा रहा है। जैविक खादों को प्राथमिकता दे रहे हैं।

क्षेत्र के किसानों के लिए प्रेरणा बने श्री शिवेंद्र सिंह की यह पहल एक सकारात्मक विकल्प के रूप में उभरी है। उनकी सफलता को देख क्षेत्र के अन्य किसान भी आधुनिक और टिकाऊ खेती (Sustainable Farming) की ओर प्रेरित हो रहे हैं। कृषि विशेषज्ञों का मानना है कि इस तरह के मॉडल से किसानों की आय दोगुनी करने और "कम लागत, अधिक उत्पादन" के लक्ष्य को प्राप्त करने में बड़ी मदद मिलेगी।

कृषि वैज्ञानिकों ने किया किसानों के खेतों का भ्रमण, मिट्टी परीक्षण और संतुलित उर्वरक उपयोग पर दिया जोर

रामनगर विकासखंड में वैज्ञानिकों ने फसलों की वर्तमान स्थिति का लिया जायजा और किसानों को बेहतर उत्पादन के लिए दिया तकनीकी मार्गदर्शन

मझगवां/ दीनदयाल शोध संस्थान कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां के वैज्ञानिकों द्वारा किसानों के खेतों पर 'निदान भ्रमण' एवं संतुलित उर्वरक उपयोग जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान मैहर जिले के रामनगर विकासखंड में वैज्ञानिकों ने फसलों की वर्तमान स्थिति का जायजा लिया और किसानों को बेहतर उत्पादन के लिए तकनीकी मार्गदर्शन दिया। भ्रमण के दौरान कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक श्री पंकज शर्मा एवं श्री अशोक कुमार शर्मा ने किसानों को मिट्टी परीक्षण (Soil Testing) के महत्व के बारे में विस्तार से बताया।

वैज्ञानिकों ने जोर देते हुए कहा कि अंधाधुंध खाद के उपयोग के बजाय मिट्टी की जांच रिपोर्ट के आधार पर 'संतुलित उर्वरक' का प्रयोग करना चाहिए। इससे न केवल लागत कम होती है, बल्कि भूमि की उर्वरक शक्ति भी बनी रहती है। इस अवसर पर विकासखंड रामनगर के वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी श्री संजय सिंह ने कृषकों को ई विकास पोर्टल से उर्वरक वितरण प्रणाली की जानकारी दी। ग्रामीण उद्यान विस्तार अधिकारी श्री अमरेंद्र मिश्रा और कृषि विस्तार अधिकारी श्रीमती प्रेमलता ने भी किसानों को विभागीय योजनाओं और उद्यानिकी फसलों के बारे में जानकारी दी।

कार्यक्रम में क्षेत्र के 45 कृषक बंधु उपस्थित रहे, कृषकों को अपनी कृषि संबंधी समस्याओं का विशेषज्ञों द्वारा समाधान किया गया एवं वैज्ञानिकों ने कीट प्रबंधन और आगामी फसलों की तैयारी को लेकर धान की सीधी बुआई एवं उन्नतशील किस्मों की विस्तार से जानकारी साझा की तथा जायद फसल तिल उड़द मूंग की फसलों में कृषकों को समसामयिक जानकारी दी गई।

विविध कलाओं के प्रदर्शन के साथ रामनाथ आश्रमशाला चित्रकूट में सम्पन्न हुआ ग्रामीण बच्चों का 17 दिवसीय व्यक्तित्व विकास शिविर

शिविर में 85 ग्राम आबादियों के 220 बच्चों का हुआ एक साथ प्रदर्शन

भारत की संस्कृतिक एवं गौरवशाली विरासत की रक्षा हेतु बच्चों ने प्रस्तुत किये विविध आयाम

सहजता और सरलता से विभिन्न स्तरों के बच्चों ने एक साथ रहकर व्यक्तित्व विकास के विविध आयामों को किया आत्मसात

चित्रकूट/ दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा विगत 25 वर्षों से चित्रकूट में प्रतिवर्ष आयोजित हो रहे व्यक्तित्व विकास शिविरों के माध्यम से ग्रामीण अंचल के बालक-बालिकाओं में मानवीय, सामाजिक और वैज्ञानिक गुणों को विकसित कर उनकी प्रतिभाओं को निखारने का अनुकरणीय कार्य किया जा रहा है। बच्चों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने की दृष्टि से रामनाथ आश्रमशाला में दिनांक 24 अप्रैल से 10 मई 2025 तक व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के 7 जिलों एवं चित्रकूट की 50 कि.मी. परिधि के 85 ग्राम पंचायतों से 220 बालक-बालिकाओं (133 बालक एवं 87 बालिकाओं) ने शिविर में सम्मिलित होकर संगीत (गायन-वादन-नृत्य), डम्बल, लेजिम, मेहंदी, रंगोली, अंग्रेजी सम्भाषण , चित्रकला, मूर्तिकला कम्प्यूटर, घोष आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

शिविर का समापन दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा संचालित रामनाथ आश्रमशाला के खेल प्रांगण में बच्चों की मनमोहक कलाओं के प्रदर्शन के साथ हुआ। शिविराधिकारी द्वारा शिविर आख्या का वाचन किया गया, शारीरिक प्रदर्शनों से कार्यक्रम की शुरूआत हुई।

अलग-अलग समूहों में शारीरिक प्रशिक्षक राधेश्याम बाघमारे, निखिल मिश्र, वीरेंद्र प्रजापति एवं दशरथ प्रजापति के नेतृत्व में लेजिम, योगासन, डम्बल, पिरामिड, आग का गोला, मोटरसाइकिल की आकर्षक प्रस्तुतियों ने सभी को प्रभावित किया। गीत की धुन पर योगचाप का प्रदर्शन तथा विद्या, आयु, प्रज्ञा, एवं बल की वृद्धि के लिये सामूहिक सूर्य नमस्कार, पी टी के साथ कदम से कदम, ताल से ताल, स्वर से स्वर मिलाकर सभी बच्चों ने डम्बल, लेजिम का प्रदर्शन किया।

मंचीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सर्वप्रथम सरस्वती वंदना की प्रस्तुति हुई। समापन समारोह के भव्य मंच से

सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भारत की विविधताओं वाली एकात्म संस्कृति का दर्शन उपस्थित जनसमुदाय ने किया। इन सभी के बीच तबला, हारमोनियम एवं ढ़ोलक वादन की प्रस्तुतियां अनोखे ढंग से हुई। भारत की प्रकृति संरक्षण, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रगौरव की रक्षा हेतु विभिन्न गीत भी बच्चों द्वारा प्रस्तुत किये गये। समापन अवसर पर शिविर के प्रशिक्षकों को अतिथियों द्वारा सम्मानित भी किया गया। मेंहदी, रंगोली एवं चित्रकला प्रशिक्षण के अन्तर्गत शिविरार्थी बच्चों द्वारा तैयार की गई सामग्री की प्रदर्शनी भी लगाई गई।

शिविराधिकारी के के बाजपेई ने कहा कि शिविर में शारीरिक एवं बौद्धिक कार्यक्रमों के साथ-साथ अलग-अलग प्रकार के विषयों पर व्यवहारिक प्रशिक्षण शिविरार्थियों ने अलग-अलग समूहों में प्राप्त किया।

शिविर के बौद्धिक प्रमुख जितेंद्र मिश्रा ने बताया कि विभिन्न सत्रों में बौद्धिक के दौरान कई महत्वपूर्ण विषयों पर विशेषज्ञों का मार्गदर्शन मिला।

दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने प्रत्येक दिवस शिविर की व्यवस्थाओं का अनुश्रवण किया एवं बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा कि आप सभी लगन एवं परिश्रम से यहाँ जो भी सीख रहे हैं अपने अपने क्षेत्रों में जाकर उसे आगे बढ़ाइए।

महंत दिव्यजीवन दास दिगंबर अखाड़ा ने कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु राम की इस अलौकिक, ऊर्जावान पावन भूमि में राष्ट्रऋषि भारत रत्न नाना जी देशमुख ने भगवान राम की तरह राजसी भोग का त्याग करके ग्रामीण अंचल के विकास हेतु जो संकल्प लिया वह आज फलीभूत हो रहे हैं। ग्रीष्मावकास को हम व्यर्थ गवाँ देते थे जिसे संस्थान इस प्रकार के आयोजनों के माध्यम से फलीभूत कर रहा है।

श्री गिरीष अग्निहोत्री जिला शिक्षाधिकारी सतना ने कहा कि ऐसे शिविरों का आयोजन आज की महती आवश्यकता हो गई है क्योंकि जीवन की आपाधापी में ज्ञान तो अधिक प्राप्त हो रहा है किंतु व्यक्तित्व का विकास नही हो पा रहा है। प्रो भरत मिश्रा पूर्व कुलगुरु महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय ने कहा कि हमारा व्यक्तित्व एवं कृतित्व ही हमारी पहचान है हम विशाल ह्रदय वाले बनें, हमारे जीवन में असीम संभावनाएं हैं ऐसे सुअवसर बार बार नही मिलते यह शिविर आप सभी के जीवन की दिशा और दशा सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका रखता है।

शिविर संयोजक राजेन्द्र सिंह ने बताया कि दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा ग्रामीण बच्चों के समग्र व्यक्तित्व विकास शिविर की शुरुआत श्रद्धेय नानाजी के मार्गदर्शन में वर्ष 2001 से हुई थी। तब से चित्रकूट में सभी शैक्षणिक प्रकल्पों के साथ मिलकर प्रतिवर्ष 10 से 20 दिनों का व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन हो रहा है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए गंगाराम यादव ने कहा कि विभिन्न ग्रामों, नगरों और विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तरों के बच्चों ने एक साथ रहकर सहजीवन का अभ्यास किया। शिविरार्थियों ने व्यक्तित्व विकास के विविध आयामों को हंसते-खेलते सहजता और सरलता से सीखा समझा है। समापन के उपरांत दीक्षांत सत्र में शिविरार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान

किया गया। इस सत्र में शिविरार्थियों ने अच्छा नागरिक बनने के लिये पंच परिवर्तनों को अपनाने की शपथ ली।

शिविर में अन्य प्रशिक्षकों के रूप में संगीत प्रशिक्षक के रूप में डॉ. रामराज पाण्डेय, डॉ. दादूराम श्रीवास, सुश्री सुधा सिंह, संजू सिंह, सियाशरण तिवारी, कला प्रशिक्षण, संजीव घाटी, रविनन्दन दुबे, कंप्यूटर में छोटेलाल राणा, सतीश कुमार, मेहंदी रंगोली गौरी कुशवाहा, रूबी विश्वकर्मा, अंग्रेजी सम्भाषण, रामवीर सक्सेना, राजेन्द्र श्रीवास, गोमय कला सुरेश राठौर, मूर्तिकला लालमन प्रजापति, डॉ. राकेश मौर्य, डॉ. अशोक पाण्डेय, इं राजेश त्रिपाठी, जितेंद्र सिंह, सत्यराम यादव एवं अन्य सभी कार्यकर्ताओं ने अपना अमूल्य योगदान प्रदान किया। बच्चों द्वारा शिविर के दौरान प्राप्त हुए अपने खट्टे मीठे अनुभव प्रस्तुत किये।

शिविर के समापन कार्यक्रम में मध्य प्रदेश की नगरीय विकास एवं आवास राज्य मंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी, सतना सांसद गणेश सिंह, विधायक चित्रकूट सुरेंद्र सिंह गहरवार, अध्यक्ष चित्रकूट विकास प्राधिकरण विजयपाल यादव, विपिन विराट महाराज कामतानाथ आरती स्थल, अमित कुमार बरहा हनुमान जी, भास्कर दास जी महाराज, महापौर सतना योगेश ताम्रकार, अध्यक्ष नगर पंचायत चित्रकूट सुश्री साधना पटेल, अध्यक्ष डिस्ट्रिक्ट कोऑपरेटिव बैंक बांदा- चित्रकूट पंकज अग्रवाल, पूर्व मंत्री उ प्र शासन चंद्रिका प्रसाद उपाध्याय, पूर्व सांसद बांदा-चित्रकूट भैरव प्रसाद मिश्र, सामाजिक कार्यकर्ता भगवती प्रसाद पाण्डेय, चंद्र प्रकाश खरे, श्याम सुंदर मिश्रा, अतुल प्रताप सिंह, विज्ञान चंद्र विश्वकर्मा, राजेंद्र द्विवेदी, देवदत्त त्रिपाठी, गुलाब शुक्ल, श्री गोपाल भाई समाजसेवी, विवेक अग्रवाल, रूपा अग्रवाल समाजसेवी सहित दीनदयाल शोध संस्थान के महाप्रबंधक डॉ. अनिल जायसवाल, डॉ. राजेन्द्र सिंह नेगी, डॉ. नवीन शर्मा, जितेंद्र श्रीवास्तव, मनोज सैनी, अनिल कुमार सिंह, डॉ. वरुण गुप्ता, हरिराम सोनी, कमलेश जी सहित समस्त प्रकल्पों के प्रमुख कार्यकर्ता, मातृशक्ति एवं गणमान्य नागरिक व अभिभावक उपस्थित रहे।

कृषि विज्ञान केन्द्र गनीवां, चित्रकूट में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर भव्य कार्यक्रम एवं मूंग फसल का प्रक्षेत्र दिवस आयोजित

कृषकों ने विशेषज्ञों से सीधी बातचीत कर अपनी जिज्ञासाओं का प्राप्त किया समाधान

चित्रकूट। कृषि विज्ञान केन्द्र, गनीवां, चित्रकूट द्वारा राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के अवसर पर एक भव्य एवं ज्ञानवर्धक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम का मुख्य विषय "वर्तमान वैश्विक संकट को कम करने में समाज की भूमिका" रखा गया, जिसमें विशेष रूप से कृषि में ईंधन एवं रासायनिक उर्वरकों के विवेकपूर्ण उपयोग पर विस्तार से चर्चा की गई।

कार्यक्रम में जिले के विभिन्न गांवों से आए लगभग 110 किसान (महिला एवं पुरुष कृषक) उपस्थित रहे, जिनमें अधिकांश ग्रीष्मकालीन मूंग उत्पादक किसान शामिल थे। किसानों ने कार्यक्रम में सक्रिय सहभागिता करते हुए वैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों से तकनीकी जानकारी प्राप्त की।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री रतन जी जिला विकास प्रबंधक, नाबार्ड उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथियों में श्री राजवीर जी प्रबंधक, इफको, श्री अनिल सिंह निदेशक, जन शिक्षण संस्थान, चित्रकूट एवं श्री जितेन्द्र सिंह समाज शिल्पी दम्पति शामिल रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. राजेन्द्र सिंह नेगी वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, केवीके चित्रकूट द्वारा की गई, जबकि कार्यक्रम का संयोजन एवं सफल संचालन डॉ. उत्तम कुमार त्रिपाठी वैज्ञानिक, कृषि प्रसार द्वारा किया गया। इस दौरान श्री राजकुमार जी उप निदेशक कृषि का भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. नेगी ने कहा कि वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन, बढ़ती ऊर्जा लागत एवं मृदा उर्वरता में गिरावट जैसे वैश्विक संकटों का समाधान केवल वैज्ञानिक तकनीकों के साथ-साथ समाज की सक्रिय भागीदारी से ही संभव है। उन्होंने किसानों को उर्वरकों एवं डीजल जैसे संसाधनों के संतुलित उपयोग के साथ-साथ जैविक एवं प्राकृतिक खेती को अपनाने का आह्वान किया।

मुख्य अतिथि श्री रतन जी ने अपने संबोधन में कहा कि नाबार्ड द्वारा किसानों की आय वृद्धि एवं टिकाऊ कृषि के लिए अनेक योजनाएं संचालित की जा रही हैं, जिनका लाभ लेकर किसान अपनी खेती को अधिक लाभकारी बना सकते हैं। उन्होंने ऊर्जा

दक्ष कृषि तकनीकों को अपनाने पर बल दिया।

श्री राजवीर जी इफको ने उर्वरकों के संतुलित एवं वैज्ञानिक उपयोग, मृदा परीक्षण के महत्व तथा नैनो उर्वरकों के प्रयोग के बारे में विस्तार से जानकारी दी। श्री अनिल सिंह निदेशक ने कौशल विकास एवं ग्रामीण युवाओं की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए उन्हें कृषि आधारित उद्यमों से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। वहीं श्री जितेन्द्र सिंह ने समाज की सहभागिता एवं सामूहिक प्रयासों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण एवं टिकाऊ विकास को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल दिया।

कार्यक्रम के दौरान किसानों को ईंधन की बचत हेतु उन्नत कृषि यंत्रों के उपयोग, फसल विविधीकरण, एवं कम

लागत वाली तकनीकों के बारे में भी जानकारी प्रदान की गई। साथ ही, मृदा स्वास्थ्य सुधार के लिए जैविक खाद, हरी खाद एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों के उपयोग पर विशेष जोर दिया गया।

कार्यक्रम के उपरांत जिले में ग्रीष्मकालीन मूंग (ग्रीन ग्राम) फसल के प्रचार-प्रसार हेतु एक प्रक्षेत्र दिवस (Field Day) का आयोजन किया गया। यह प्रक्षेत्र दिवस रोहित कुमार एवं अभय कुमार के खेत पर आयोजित किया गया, जहाँ उन्नत किस्मों एवं वैज्ञानिक पद्धति से की गई मूंग की खेती का प्रदर्शन किया गया। किसानों ने फसल की उत्कृष्ट वृद्धि एवं उत्पादन क्षमता का अवलोकन किया तथा

फसल में उन्नत बीज, संतुलित उर्वरक प्रबंधन, जल संरक्षण तकनीक, एवं कीट-रोग नियंत्रण के उपायों की जानकारी दी गई। साथ ही, यह भी बताया गया कि मूंग जैसी दलहनी फसलें मृदा की उर्वरता बढ़ाने में सहायक होती हैं और कम लागत में अधिक लाभ प्रदान कर सकती हैं।

विशेषज्ञों से सीधी बातचीत कर अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया।

विशेषज्ञों द्वारा किसानों को मूंग की फसल में उन्नत बीज, संतुलित उर्वरक प्रबंधन, जल संरक्षण तकनीक, एवं कीट-रोग नियंत्रण के उपायों की जानकारी दी गई। साथ ही, यह भी बताया गया कि मूंग जैसी दलहनी फसलें मृदा की उर्वरता बढ़ाने में सहायक होती हैं और कम लागत में अधिक लाभ प्रदान कर सकती हैं।

कार्यक्रम के अंत में सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापित किया गया तथा किसानों से अपील की गई कि वे वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर सतत एवं पर्यावरण अनुकूल कृषि की दिशा में आगे बढ़ें। इस सफल आयोजन ने जिले के किसानों में नई जागरूकता एवं उत्साह का संचार किया।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर हुई विचार गोष्ठी

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में ऊर्जा संरक्षण में हमारी भूमिका पर वक्ताओं ने रखे विचार

चित्रकूट/ दीनदयाल शोध संस्थान चित्रकूट द्वारा "वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में ऊर्जा संरक्षण में हमारी भूमिका" पर राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में महंत माधव दास करह आश्रम एवं मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. भरत मिश्रा पूर्व कुलगुरु महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय एवं वक्ता के रूप में इं. आंजनेय पांडेय कुलसचिव महात्मा गांधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय, प्रो अमरजीत सिंह अधिष्ठाता प्रबंधन संकाय उपस्थित रहे। संगोष्ठी में शिक्षाविदों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों एवं समाजसेवियों की सक्रिय सहभागिता रही।

कार्यक्रम का संचालन एवं कार्यक्रम के उद्देश्य की विस्तृत जानकारी डॉ. मनोज त्रिपाठी वरिष्ठ शोध अधिकारी एवं प्रभारी शोध आरोग्यधाम द्वारा प्रदान की गई। प्रो भरत मिश्रा ने कहा कि ऊर्जा संरक्षण हमारी नैतिक जिम्मेदारी है इसलिए हम सबको इसको करना चाहिए। महंत माधव दास ने कहा कि हमें तमोगुण छोड़कर रजोगुण एवं सतोगुण वाली ऊर्जा संरक्षित करनी चाहिए, वाणी पर संयम रखना चाहिए। हनुमान जी महाराज ने सबसे अधिक ऊर्जा का संचय किया है तभी वह समुद्र पार कर वापस आ सके। अतः हमें आंतरिक एवं वाह्य दोनों क्षेत्र की ऊर्जा का संरक्षण एवं संचय करना चाहिए।

प्रो. आंजनेय पांडेय ने कहा कि हमें ऊर्जा के नवीनीकृत स्रोतों का उपयोग अधिक से अधिक करना चाहिए। प्रो. अमरजीत सिंह ने कहा कि ऊर्जा के दुरुपयोग के कारण आज ग्लोबल वार्मिंग जैसी स्थितियां पैदा हो रही है जिसके लिए हम स्वयं जिम्मेदार हैं और यदि अभी नहीं चेते तो भविष्य में कई गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अशोक पांडेय द्वारा किया गया। कार्यक्रम में दीनदयाल शोध संस्थान के महाप्रबंधक डॉ. अनिल जायसवाल, उद्यमिता विद्यापीठ प्रभारी मनोज सैनी, सुरेंद्रपाल विद्यालय के प्राचार्य जितेंद्र श्रीवास्तव, वरिष्ठ व्याख्याता अशोक दीक्षित सहित विद्यालय के अनेक शिक्षक एवं शोधार्थी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

आरोग्यधाम के दंत चिकित्सा विभाग में शुरू हुई लेज़र डेंटिस्ट्री, शोध-नवाचार की दिशा में अनुकरणीय प्रयास

डेंटल की नवीनतम तकनीकों और अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ चित्रकूट के ग्रामीण क्षेत्र के लिए डेन्टल प्रेक्टिस को किया जा रहा इम्प्रूव

चित्रकूट/ दीनदयाल शोध संस्थान का स्वास्थ्य प्रकल्प आरोग्यधाम, विगत 3 दशकों से भी अधिक समय से 'आजीवन स्वास्थ्य' की परिकल्पना के साथ चित्रकूट में सेवारत है। आरोग्यधाम का दंत चिकित्सा विभाग विगत 25 वर्षों से अत्यंत गुणवत्तायुक्त दंत चिकित्सा उपलब्ध करा रहा है।

नानाजी कहते थे कि जो लोग अर्बन एरिया शहरों में रह रहे हैं जिनके पास पर्याप्त पैसे हैं उनके पास इलाज के लिए दुनिया के सारे सर्वोत्तम अस्पताल उपलब्ध है, लेकिन जो ग्रामीण अंचलों में और आदिवासी इलाकों में हमारे बंधु भगिनी रह रहे हैं जिनके पास संसाधनों और पैसों की कमी हैं उनको भी सर्वोत्तम इलाज मिले इसका हक़ है। इस ध्येय को सूत्र मानकर आरोग्यधाम का दंत चिकित्सा विभाग पिछले 25 वर्षों से ग्रामीण अंचलों में अपनी सेवाएँ आधुनिक टेक्नोलॉजी के साथ देता आ रहा है। दंत चिकित्सा विभाग द्वारा इस सप्ताह डेंटिस्ट्री में क्रांति लाने वाली लेज़र मशीन से दांतों के रोगों का सफल इलाज शुरू कर दिया गया है। इस मशीन से इलाज करने से गुणवत्ता भी बढ़ती है और सक्सेस रेट भी 4-5 गुना हो जाता है।

आरोग्यधाम दंत चिकित्सा विभाग के प्रभारी एवं वरिष्ठ डेंटिस्ट डॉ. वरुण गुप्ता ने बताया कि लेजर दंत चिकित्सा एक ऐसी दंत चिकित्सा पद्धति है जिसमें सटीक उपचार करने के लिए पारंपरिक उपकरणों के बजाय केंद्रित प्रकाश किरणों का उपयोग किया जाता है। लेज़र डेंटिस्ट्री ने मुंह से संबंधित समस्याओं के उपचार के तरीके में

क्रांतिकारी बदलाव ला दिया है। लेजर सिस्टम अधिक सटीक कार्य करने में सक्षम हैं, और अक्सर रोगी को कम असुविधा होती है। लेजर तकनीक के माध्यम से सटीक, दर्द रहित और प्रभावी उपचार संभव हो पाया है, जिसमें आसपास के ऊतकों को न्यूनतम क्षति पहुंचती है।

डॉ. गुप्ता ने बताया कि ग्रामीण क्षेत्र के लिए भी डेन्टल प्रेक्टिस को इम्प्रूव किया जा रहा है।

इसके अलावा चालित चिकित्सालय के माध्यम से भी दूरस्थ गावों में चिकित्सा सेवाएँ उपलब्ध कराई जाती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य शिविर आरोग्यधाम द्वारा नियमित संचालित किये जा रहे हैं।

सुरेन्द्रपॉल ग्रामोदय विद्यालय में 3 एमपी बटालियन रीवा के अन्तर्गत 10 दिवसीय एनसीसी-एटीसी कैंप

कैंप में एनसीसी कैडेटों को ड्रिल, वैपन ट्रेनिंग एवं मैप रीडिंग का दिया गया प्रशिक्षण

चित्रकूट/ दीनदयाल शोध संस्थान के शैक्षणिक प्रकल्प सुरेंद्रपाल ग्रामोदय विद्यालय चित्रकूट में 3 एमपी बटालियन एनसीसी रीवा के कर्नल संदीप जसपाल के निर्देशन में दस दिवसीय एटीसी-163, कैंप का आयोजन दीनदयाल परिसर चित्रकूट में किया गया।

कैंप की जानकारी देते हुए सूबेदार मेजर यशपाल सिंह एवं कैंप एडजुटेंट सेकंड आफीसर मोहित सिंह कपूर ने बताया कि कैंप कमांडर कर्नल संदीप जसपाल के नेतृत्व में इस शिविर में 377 कैडेट्स जो कि 11 संस्थानों से आये थे उन्होंने भाग लिया। फौज की बुनियाद एवं अनुशासन सिखाने हेतु आर्मी के 13 जवानों एवं विभिन्न कॉलेजों एवं विद्यालयो के 10 एएनओ ने नेतृत्व किया।

इस दौरान छात्रों को शहीदों के प्रति आभार व्यक्त कराने हेतु 'रेथ लेथिंग सेरेमनी' संपन्न कराई गई, जहाँ गार्ड ऑफ आनर देकर युद्ध में शहीद हुए सैनिकों, राष्ट्रीय नायकों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई, जिसमें सुरेन्द्रपाल ग्रामोदय विद्यालय से गार्ड आफ आनर में एसडी के 7 छात्र तथा 5 छात्राएं सम्मिलित हुई।

इसके अलावा इस बार जबलपुर के आर्मी रिक्रूटिंग सेंटर से आए कर्नल रितिक जी ने अग्निवीर योजना की वृहद

जानकारी दी तथा भर्ती की पूरी प्रक्रिया बताई।

कैंप में सम्मिलित एनसीसी कैडेटों को ड्रिल, वैपन ट्रेनिंग एवं मैप रीडिंग का प्रशिक्षण संचालित किया गया। इसके अलावा कैडेट्स को विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण एवं अच्छे नागरिक के गुण एवं राष्ट्रभक्ति से संबंधित कई कक्षाएं भी आयोजित की गई।

शिविर के बौद्धिक सत्र में कैडेट्स को नागरिक सुरक्षा और आपदा प्रबन्धन से सम्बन्धित प्रशिक्षण भी दिया गया, शिविर में कैडेट्स को ड्रिल, मार्च पास्ट, वेपन ट्रेनिंग और फील्ड क्राफ्ट एवं मैप रीडिंग, कम्पास का अभ्यास करवाया गया।

समापन अवसर पर कमान अधिकारी संदीप जसपाल ने एनसीसी के द्वारा भारत में युवाओं को अनुशासित, देशभक्त और जिम्मेदार नागरिक बनाकर राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना जैसी चीजों पर जोर दिया। ताकि युवाओं में कर्तव्यपरायणता और निस्वार्थ सेवा भाव जागृत किया जा सके।

शिविर में सुरेन्द्रपाल ग्रामोदय विद्यालय के एनसीसी अधिकारी कैप्टन सुनील द्विवेदी, लेफ्टीनेंट रीना मालवीय सहित मेजर अंशुमान पाठक, सेकंड आफीसर राजेंद्र श्रीवास ने पूरे समय मौजूद रहकर कैंप की सभी गतिविधियों को सम्पन्न कराया।

खेत बचाओ अभियान कार्यक्रम, कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों ने किसानों से किया संपर्क

किसानों को रासायनिक उर्वरकों के संतुलित उपयोग के साथ-साथ उनके वैकल्पिक एवं टिकाऊ स्रोतों के प्रति किया गया जागरूक

चित्रकूट/ कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 1 जून से 30 जून 2026 तक संचालित किए गए राष्ट्रव्यापी "खेत बचाओ अभियान" के अंतर्गत तुलसी कृषि विज्ञान केंद्र, गनीवां (दीनदयाल शोध संस्थान), चित्रकूट द्वारा व्यापक जनजागरूकता कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

कृषि विज्ञान केंद्र, गनीवां के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. राजेंद्र सिंह नेगी ने बताया कि अभियान के तहत केंद्र के वैज्ञानिक चित्रकूट जनपद के पांच विकासखंडों— कर्वी, मऊ, पहाड़ी, रामनगर एवं मानिकपुर —के गांवों में पहुंचकर किसानों से प्रत्यक्ष संवाद किया तथा खेत स्तर पर उन्नत कृषि तकनीकों का प्रसार हुआ। अभियान का मुख्य उद्देश्य किसानों को रासायनिक उर्वरकों के संतुलित एवं विवेकपूर्ण उपयोग के साथ-साथ उनके वैकल्पिक एवं टिकाऊ स्रोतों के प्रति जागरूक करना था। उन्होंने बताया कि किसानों को हरी खाद, जैविक एवं प्राकृतिक खेती, धान की फसल में एजोला उत्पादन, जीवामृत एवं घनजीवामृत जैसी तकनीकों की व्यवहारिक जानकारी प्रदान की गई। साथ ही खेत प्रदर्शन एवं किसान गोष्ठियों के माध्यम से इन तकनीकों के लाभों को किसानों तक पहुंचाया गया।

डॉ. नेगी ने बताया कि कृषि विज्ञान केंद्र में इस वर्ष खरीफ में धान, श्री अन्न (मिलेट्स), दलहन एवं तिलहन फसलों में समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन अपनाकर रासायनिक उर्वरकों के उपयोग में लगभग 30 प्रतिशत तक कमी लाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसके लिए फसल चक्र, हरी खाद, गोबर की खाद, जैव उर्वरकों, एजोला, जीवामृत एवं घनजीवामृत के उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है।

धान फसल में धान–चना फसल चक्र, ढैंचा की हरी खाद, गोबर की खाद, एजोस्पाइरिलम एवं पीएसबी जैव

उर्वरकों के उपयोग तथा मिट्टी परीक्षण आधारित पोषण प्रबंधन को अपनाया जाएगा। इसी प्रकार श्री अन्न फसलों में मिलेट्स–दलहन फसल चक्र, जीवामृत एवं घनजीवामृत के प्रयोग के साथ संतुलित उर्वरक प्रबंधन पर बल दिया जाएगा। दलहनी फसलों में राइजोबियम एवं फॉस्फेट घोलक जीवाणु द्वारा बीजोपचार, जैविक खाद एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों के उपयोग को बढ़ावा दिया जाएगा, जबकि तिलहन फसल तिल में तिल–चना अथवा तिल–मसूर फसल चक्र, जैव उर्वरकों तथा सल्फर युक्त संतुलित पोषण प्रबंधन को अपनाया जाएगा।

वैज्ञानिकों ने बताया कि मृदा स्वास्थ्य संरक्षण, उत्पादन लागत में कमी तथा पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने के लिए जैविक एवं प्राकृतिक कृषि पद्धतियों को अपनाना समय की आवश्यकता है। किसानों को मृदा परीक्षण आधारित उर्वरक प्रबंधन, संतुलित पोषण एवं स्थानीय संसाधनों पर आधारित कृषि तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

यह अभियान पूरे जून माह तक संचालित हुआ, जिसके अंतर्गत विभिन्न गांवों में किसान गोष्ठियां, प्रशिक्षण कार्यक्रम, खेत प्रदर्शन, तकनीकी परामर्श एवं जागरूकता गतिविधियां आयोजित हुई। अभियान से बड़ी संख्या में किसानों एवं ग्रामीण युवाओं के साथ वैज्ञानिकों का जुड़ाव हुआ।

कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों का मानना है कि यह पहल कृषि को अधिक टिकाऊ, लाभकारी एवं पर्यावरण-अनुकूल बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुई है।

खेत बचाओ अभियान के तहत कृषि विज्ञान केंद्र में अजोला उत्पादन का प्रदर्शन

चित्रकूट। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संचालित "खेत बचाओ अभियान" के अंतर्गत तुलसी कृषि विज्ञान केंद्र, गनीवां (दीनदयाल शोध संस्थान), चित्रकूट में अजोला उत्पादन एवं उपयोग पर एक प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में 30 से अधिक महिला किसानों तथा बी. एससी. कृषि (रावे) के 18 विद्यार्थियों ने सहभागिता की। कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिभागियों को अजोला उत्पादन की विधि, इसके रखरखाव तथा धान के खेत में इसके उपयोग के बारे में व्यावहारिक जानकारी प्रदान की गई।

वैज्ञानिकों ने बताया कि अजोला एक उपयोगी जैविक संसाधन है, जिसका उपयोग धान की खेती में जैव उर्वरक के रूप में तथा पशुओं के पोषक आहार के रूप में किया जा सकता है। इससे रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम करने, मृदा स्वास्थ्य सुधारने एवं उत्पादन लागत घटाने में सहायता मिलती है।

कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों ने अजोला उत्पादन की पूरी प्रक्रिया को प्रत्यक्ष रूप से देखा तथा वैज्ञानिकों से तकनीकी जानकारी प्राप्त की। उपस्थित महिला किसानों एवं विद्यार्थियों ने इस तकनीक में विशेष रुचि दिखाई और इसे अपनाने की इच्छा व्यक्त की।

बाल जगत प्रकल्प में लोकमाता सुकळीकर ताई की स्मृति में आंतरिक जलतरण प्रतियोगिता का आयोजन, 275 प्रशिक्षु बच्चों ने की सहभागिता

नागपुर/ दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा नागपुर में संचालित बाल जगत प्रकल्प में लोकमाता सुकळीकर ताई के स्मृति में 30 मई 2026 को एक आंतरिक जलतरण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में नागपुर शहर के पुलिस आयुक्त डॉ. रविंदर सिंगल विशेष रूप से उपस्थित थे। इस अवसर पर निशुल्क नेत्र जांच एवं स्वास्थ्य शिविर का भी आयोजन किया गया। साथ ही, बालजगत में प्रशिक्षण ले रहे कराटे विद्यार्थियों ने अपने कौशल का प्रत्यक्ष प्रदर्शन भी किया। कार्यक्रम का संयोजन प्रकल्प अध्यक्ष श्री अभिनंदन पलसापुरे ने किया और प्रकल्प प्रभारी सौ. अनुजा ताई परचुरे तथा प्रकल्प की मार्गदर्शिका सौ. मीराताई खडक्कर जी सहित अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

पुलिस आयुक्त डॉ. रविंदर सिंगल ने अपने मुख्य आतिथ्य उद्बोधन में कहा कि दीनदयाल शोध संस्थान के बालजगत प्रकल्प के माध्यम से संस्कारित, जिम्मेदार और राष्ट्रभक्त नागरिकों का निर्माण किया जा रहा है तथा इन उपक्रमों के जरिए भविष्य की

बावनकुले, स्वास्तिक जायसवाल, शॉन सूर्यवंशी, अर्जुन कुमावत, स्वरा चेपे, वरालिका गांजापुरे, स्वरा नेमाड, वेद चक्रपाणी, अर्णव कानडे, सिद्धार्थ फडणवीस, पार्थ देशमुख, अर्जुन महाशब्दे, यश जीवतोडे, माधवी आंबिलडुके, सचिन चौधरी, गुलशन त्रिवेदी, पहल मेश्राम, तन्वी आंबिलडुके, रेव बावनकुले, पार्थ देशमुख, गार्गी टालाटुले, गुलशन त्रिवेदी, सचिन चौधरी, सम्राट जोग एवं सार्थक भुरे आदि।

सक्षम पीढ़ी तैयार होगी। बालजगत के स्विमिंग पूल पर आयोजित इस प्रतियोगिता में 275 प्रशिक्षुओं ने भाग लिया। उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए साहस टीम ने चल वैजयंती कप अपने नाम किया, इससे पहले प्रतियोगिता का उद्घाटन सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति मीरा खडक्कर के हाथों किया गया।

पदक विजेता खिलाड़ीः श्रेया देशमुख, गार्गी हरडे, रुही गुप्ता, विप्लव गावंडे, अद्वैत लिमये, ओंकार मराठे, पहल मेश्राम, माही चव्हाण, स्वरा

विश्व पर्यावरण दिवस पर 'जलवायु के लिए अभी कार्यवाही' एवं 'प्रकृति से प्रेरणाः जलवायु और हमारे सुरक्षित भविष्य के लिए कदम' थीम पर हुईं संगोष्ठियां

जेएसएस एवं केवीके चित्रकूट के संयुक्त तत्वावधान में विश्व पर्यावरण दिवस पर लोगों को वृक्षारोपण के लिए किया गया प्रेरित

चित्रकूट/ दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा संचालित एवं कौशल विकास व उद्यमशीलता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित जन शिक्षण संस्थान चित्रकूट तथा तुलसी कृषि विज्ञान केंद्र गनीवां के संयुक्त तत्वावधान में करौहां ग्राम पंचायत में विश्व पर्यावरण दिवस एवं खेत बचाओ अभियान कार्यक्रम का आयोजन जलवायु के लिए अभी कार्यवाही थीम पर किया गया। जिसमें राजकुमार जी उप निदेशक कृषि, राजेन्द्र सिंह नेगी प्रमुख एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक कृषि विज्ञान केंद्र गनीवां, अनिल कुमार सिंह निदेशक जन शिक्षण संस्थान, डॉ. कमलाशंकर शुक्ला मृदा एवं मत्स्य वैज्ञानिक, रतन जी जिला विकास प्रबंधक नाबार्ड, डॉ. उत्तम त्रिपाठी प्रसार वैज्ञानिक के द्वारा माल्यार्पण एवं दीपप्रज्ज्वलन के साथ किया गया।

डॉ. राजेन्द्र सिंह नेगी ने अपने उदबोधन में कहा कि प्राकृतिक असंतुलन (पर्यावरण असंतुलन) से पारिस्थितिक तंत्र के प्रमुख घटकों जल, वायु, मिट्टी, और जलवायु के बीच का

प्राकृतिक सामंजस्य बिगड़ रहा है जिसका मुख्य कारण अनियंत्रित वनों की कटाई, अंधाधुंध प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन शामिल हैं। इसका सीधा और गहरा असर कृषि और मानव जीवन पर पड़ रहा है।

डॉ. कमलाशंकर शुक्ला मृदा एवं मत्स्य वैज्ञानिक ने कहा कि प्राकृतिक असंतुलन से मानव अछूता नही है इससे मानव स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है, वहीं आजीविका और अर्थव्यवस्था की मार पड़ रही है कृषि पर निर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था चरमरा जाती है, जिससे किसानों को भारी आर्थिक नुकसान और पलायन का दंश झेलना पड़ता है।

राजकुमार कृषि उप निदेशक ने कहा कि पेयजल की समस्या आज विकराल हो रही है क्योंकि भू-जल स्तर के लगातार नीचे जाने से शुद्ध पेयजल की भारी किल्लत हो रही है। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से तापमान वृद्धि और प्राकृतिक आपदाओं के कारण कुपोषण, विस्थापन और मानसिक तनाव की समस्याएँ बढ़ रही हैं। प्राकृतिक असंतुलन को रोकने के लिए सतत कृषि और प्राकृतिक खेती को

अपनाना बेहद जरूरी है।

श्री अनिल सिंह निदेशक ने पर्यावरण दिवस पर आयोजित संगोष्ठी में जन शिक्षण संस्थान द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न रोजगार परख कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी प्रदान कर स्वरोजगारी एवं स्वावलम्बी बनने की अपील की साथ ही कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस पर कहा कि लोगों को जागरूक करने के लिए प्रत्येक वर्ष 5 जून को प्रकृति के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है।

डॉ. उत्तम त्रिपाठी ने समाज की सहभागिता एवं सामूहिक प्रयासों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण एवं टिकाऊ विकास को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल दिया।

श्री रतन जी जिला विकास प्रबंधक नाबार्ड ने उर्वरकों के संतुलित एवं वैज्ञानिक उपयोग, मृदा परीक्षण के महत्व तथा उन्होंने किसानों को उर्वरकों एवं डीजल जैसे संसाधनों के संतुलित उपयोग के साथ-साथ जैविक एवं प्राकृतिक खेती को अपनाने का आह्वान किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में बनारसीलाल पाण्डेय, प्रभाकर मिश्रा, अभय राज, राजकिशोर द्विवेदी एवं समस्त कार्यकर्ताओ ने अपना अमूल्य योगदान प्रदान किया। संकेकित रूप में अतिथियों द्वारा 5 वृक्षों का रोपण भी किया गया, इस कार्यक्रम में लगभग 57 महिलाएं एवं 89 पुरुषों ने प्रतिभाग किया।

वहीं दूसरी ओर एक अन्य कार्यक्रम में दीनदयाल शोध संस्थान के आरोग्यधाम परिसर स्थित सभागार में

'प्रकृति से प्रेरणाः जलवायु और हमारे सुरक्षित भविष्य के लिए कदम' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें मेरी जीवन शैली मेरा पर्यावरण, रोजमर्रा की आदतों में छोटे-छोटे बदलाव से पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन कल नहीं आज कदम, बढ़ते तापमान के खिलाफ हमारी व्यक्तिगत जिम्मेदारी, प्रकृति से प्रेरणाः जलवायु और हमारे सुरक्षित भविष्य के लिए कदम पर्यावरण एवं स्वास्थ्य बदलते मौसम और हमारे स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव, पंचमहाभूत और आरोग्य प्रकृति के पांच तत्वों का संरक्षण एवं संवर्धन और मानव स्वास्थ्य विषय पर आयोजित की गई। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. रामनारायण त्रिपाठी संचालक गायत्री शक्तिपीठ एवं डॉ. शशिकांत त्रिपाठी महात्मा गांधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय, अपराजित शुक्ला सचिव दीनदयाल शोध संस्थान मुख्य रूप में उपस्थित रहे। मुख्य वक्ता डॉ. शशिकांत त्रिपाठी ने कहा कि हमें अपने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए सही दिशा में प्रयास करने की आवश्यकता है। पर्यावरण संरक्षण के अभाव में जीवन शून्य है हम सभी अपने बच्चों, बुजुर्गों के जन्मदिवस एवं वैवाहिक वर्षगांठ में कम से कम एक वृक्ष अवश्य रोपित कर उनका संरक्षण करें, उनको पुष्पित व पल्लवित करें। यथासंभव प्लास्टिक के उपयोग को कम से कम करने का प्रयास करें एवं दूसरों को भी जागरूक करें।

अध्यक्षीय उद्बोधन करते हुए डॉ. रामनारायण त्रिपाठी ने कहा कि हमारे वेद, पुराण भी हमें प्रकृति के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु सदैव प्रेरित करते हैं। महर्षि वाल्मीकि ने भी स्पष्ट किया कि बिना प्रकृति संतुलन के कुछ भी संरक्षित नहीं रह सकता क्योंकि इस सम्पूर्ण जगत के अस्तित्व का आधार प्रकृति है। कार्यक्रम का संचालन आयुर्वेद सदन के प्रभारी डॉ. मनोज त्रिपाठी द्वारा किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में महाप्रबंधक डॉ. अनिल जायसवाल, राव प्रबल श्रीवास्तव, केके बाजपेई, मनोज सैनी, मदन तिवारी, जितेंद्र श्रीवास्तव सहित सभी प्रकल्प प्रमुख एवं कार्यकर्ता व नगर के प्रबुद्ध जन उपस्थित रहे।

कृषि विज्ञान केंद्र एवं आत्मा परियोजना द्वारा कृषकों को दिया ग्रामीण कौशल विकास प्रशिक्षण

पारंपरिक खेती के साथ–साथ आधुनिक कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने विभिन्न तकनीकियों में किया प्रशिक्षित

मझगवां/ दीनदयाल शोध संस्थान कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां में 25 दिवसीय ग्रामीण कौशल विकास प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. नवीन कुमार शर्मा ने बताया की ग्रामीण युवाओं और किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां एवं आत्मा परियोजना सतना के संयुक्त तत्वावधान में 25 दिवसीय ग्रामीण कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन हुआ, यह प्रशिक्षण 20 मई 2026 से 13 जून 2026 तक निरंतर संचालित किया गया। इस कार्यक्रम में सतना एवं मैहर जिले के 8 विकासखंड के विभिन्न ग्रामों के प्रगतिशील किसान और ग्रामीण युवा बढ़-चढ़कर हिस्सा लिए।

प्रशिक्षण प्रभारी वैज्ञानिक श्री पंकज शर्मा एवं श्री पुष्पेंद्र सिंह गुर्जर ने बताया की 25 दिनों तक चले इस प्रशिक्षण में कृषि क्षेत्र से जुड़े अलग-अलग महत्वपूर्ण विषयों पर व्यावहारिक और सैद्धांतिक जानकारी दी गई। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य पारंपरिक खेती के साथ-साथ आधुनिक कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना है, ताकि किसानों की लागत कम हो और उनकी आय में वृद्धि हो सके।

दीनदयाल शोध संस्थान के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री राजेन्द्र सिंह ने प्रशिक्षणार्थियों को ग्रामों के स्वावलंबी एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रेरित किया। प्रशिक्षण में डॉ. अखिलेश जागरे वैज्ञानिक ने मशरूम उत्पादन, पौध संरक्षण एवं डॉ. अजय चौरसिया समन्वित कृषि प्रणाली, बीज उत्पादन तथा वैज्ञानिक श्री पुष्पेंद्र सिंह गुर्जर ने सब्जी बीज उत्पादन की उन्नत तकनीक

व श्री हेमराज द्विवेदी वैज्ञानिक गृह विज्ञान ने फल एवं सब्जी प्रसंस्करण एवं मूल्यवर्धन, श्री अशोक शर्मा द्वारा वर्मी-कम्पोस्ट उत्पादन तकनीक, इंजी. हरेन्द्र गुप्ता ने कृषि में डिजिटल माध्यम का प्रयोग, श्री पंकज शर्मा वैज्ञानिक ने प्राक्रतिक खेती उत्पादन तकनीक, डॉ. ए. के. भौमिक आधिष्ठाता कृषि संकाय ए.के.एस. विश्वविद्यालय सतना ने रेशम उत्पादन तकनीक, मधुमक्खी पालन, डॉ. दीपेश भारत मिश्र वैज्ञानिक पशुपालन द्वारा डेयरी प्रबंधन बकरी एवं मुर्गी पालन, श्री सत्यम चौरिहा प्रक्षेत्र प्रबंधक द्वारा परंपरागत बीजों का सरंक्षण जैसे अलग अलग विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

प्रशिक्षण की आत्मा योजना प्रभारी श्रीमती अलका शुक्ला का कहना है कि इस 25 दिवसीय प्रशिक्षण को पूरा करने के बाद ग्रामीण युवा न सिर्फ अपनी खेती को बेहतर बना सकेंगे, बल्कि कृषि आधारित खुद का व्यवसाय (जैसे- नर्सरी प्रबंधन, जैविक खाद एवं जैव कीटनाशक उत्पादन,बीज उत्पादन, मशरूम उत्पादन, खाद्य प्रसंस्करण, डेयरी, बकरी पालन, मुर्गी पालन एवं बकरी पालन आदि) स्वरोजगार स्थापित कर आत्मनिर्भर बन सकेंगे। प्रशिक्षण के समापन पर सभी सफल प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए।

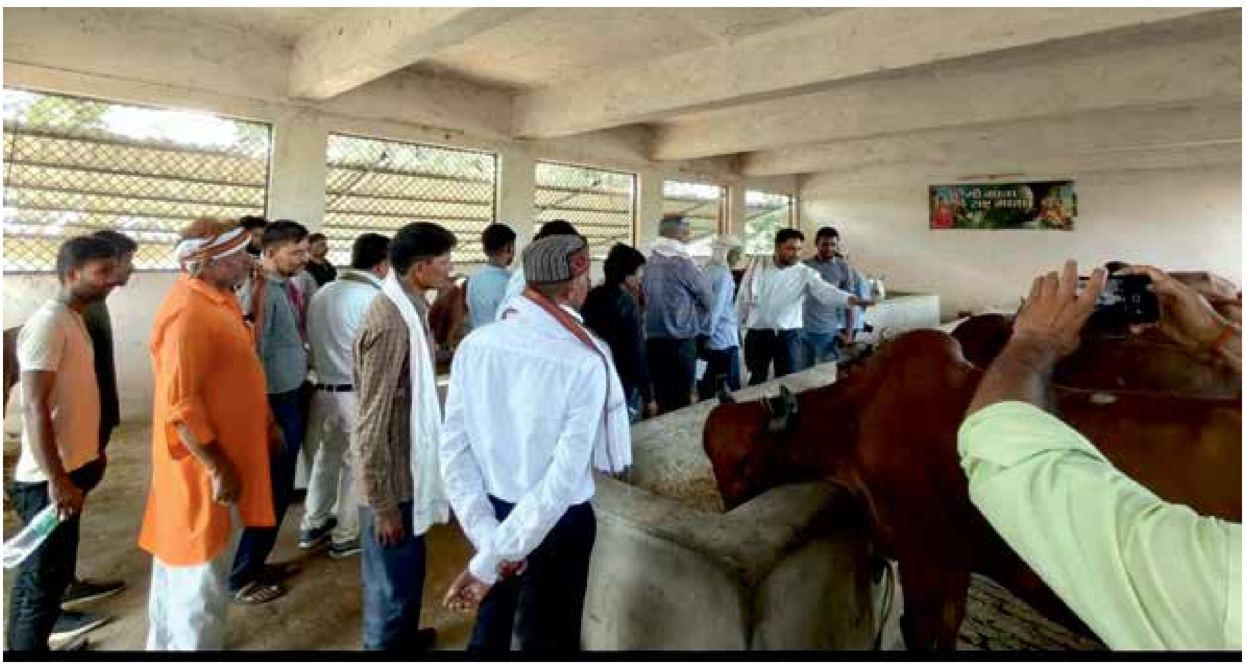

जनजातीय बाहुल्य ग्राम बांका में मनाया गया भगवान बिरसा मुंडा जी का 126वां बलिदान दिवस

डीआरआई के प्रकल्पों एवं स्वावलंबन केन्द्रों सहित कई जगह हुए विविध कार्यक्रम

केवीके द्वारा सब्जी, हरी खाद किट का किया गया वितरण

चित्रकूट- मझगवां/ भगवान बिरसा मुंडा के 126वें बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा ग्राम बांका सहित स्वावलंबन केन्द्रों एवं प्रकल्पों में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। ग्राम बांका में जय बिरसा मुंडा ग्रामीण विकास शोध समिति के सहयोग से आयोजित वृहद कार्यक्रम के शुभारंभ में बिरसा मुंडा जी की प्रतिमा पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन, सामाजिक कार्यकर्ता श्री चूड़ामणि सिंह, जिला पंचायत सदस्य श्री संजय सिंह, जनपद पंचायत सदस्य श्रीमति सोना बाई एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सतना जिला संघचालक रामबेटा कुशवाहा, श्री लक्ष्मीकांत द्विवेदी महाकौशल प्रांत सह बौद्धिक प्रमुख राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की उपस्थिति के साथ ही ग्राम बांका के सरपंच बैजनाथ प्रजापति एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्री शंकरदयाल त्रिपाठी की उपस्थिति रही।

बिरसा मुंडा जी के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में उद्यमिता विद्यापीठ द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में स्वरोजगार हेतु चलाए जा रहे सिलाई प्रशिक्षण पूर्ण कर चुके प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। साथ ही कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां द्वारा खाद्य प्रसंस्करण पर प्रशिक्षण का शुभारंभ किया गया एवं सब्जी, हरी खाद किट वितरण का कार्य किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री चूड़ामणि सिंह ने भगवान बिरसा मुंडा जी को नमन करते हुए कहा कि विदेशी हुकूमत के खिलाफ उनका अदम्य साहस और जनजातीय समाज की संस्कृति की रक्षा के लिए उनका सर्वस्व त्याग हर पीढ़ी को प्रेरित करता रहेगा। कार्यक्रम में दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव अभय महाजन ने कहा कि जननायक भगवान बिरसा

मुंडा और भारत रत्न नानाजी देशमुख भारतीय इतिहास की दो ऐसी महान विभूतियां हैं, जिन्होंने राष्ट्र की स्वतंत्रता, सामाजिक समरसता और ग्रामीण विकास में अतुलनीय योगदान दिया है। एक ओर बिरसा मुंडा ने जल, जंगल, जमीन की रक्षा के लिए समाज को संगठित किया और अंग्रेजी हुकूमत को चुनौती दी। वहीं, दूसरी ओर भारत रत्न राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख ने ग्रामीण उत्थान, शिक्षा और समग्र ग्राम विकास का बीड़ा उठाया, आज हम सबको महान विभूतियों से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ने की आवश्यकता है साथ ही भूमि सुपोषण, प्राकृतिक कृषि पर क्षेत्र वासियों का मार्गदर्शन किया।

कार्यक्रम में उद्यमिता विद्यापीठ के प्रभारी मनोज सैनी एवं कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आस-पास के ग्रामों से बड़ी संख्या में लोगों ने सहभागिता की।

औषधीय पौधों की उन्नत खेती, प्रसंस्करण एवं उपयोग" पर प्रशिक्षण

प्रशिक्षण के दौरान किसानों को विभिन्न औषधीय पौधे एवं रोपण सामग्री का किया गया वितरण

मझगवां/ दीनदयाल शोध संस्थान कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां द्वारा क्षेत्रीय सह सुविधा केंद्र-मध्य क्षेत्र, राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (NMPB), आयुष मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर के सहयोग से ग्राम पंचायत नकैला में "औषधीय पौधों की उन्नत खेती, प्रसंस्करण एवं उपयोग" विषय पर एक दिवसीय किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को औषधीय पौधों की वैज्ञानिक खेती, प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन तथा विपणन संबंधी जानकारी प्रदान कर उनकी आय में वृद्धि के नए अवसर उपलब्ध कराना था।

कार्यक्रम का शुभारंभ भारत माता, पंडित दीनदयाल उपाध्याय एवं राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख के चित्रों पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया। उपस्थित अतिथियों एवं किसानों ने ग्रामीण स्वावलंबन, आत्मनिर्भर कृषि तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के संकल्प को दोहराया।

कार्यक्रम में मुख्य विशेषज्ञ के रूप में डॉ. ज्ञानेन्द्र तिवारी (प्रिंसिपल इन्वेस्टिगेटर कम प्रोजेक्ट को-ऑर्डिनेटर, राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, भारत सरकार, क्षेत्रीय सह सुविधा केंद्र-मध्य क्षेत्र (मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़), जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर) उपस्थित हुए। उन्होंने किसानों को औषधीय पौधों की बढ़ती राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मांग, उनकी व्यावसायिक संभावनाओं तथा वैज्ञानिक उत्पादन तकनीकों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अश्वगंधा, कालमेघ, तुलसी, शतावरी, सर्पगंधा, ब्राह्मी, गिलोय एवं सफेद मूसली जैसी औषधीय फसलें किसानों की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। उन्होंने औषधीय पौधों के प्रसंस्करण, गुणवत्ता प्रबंधन, भंडारण

तथा विपणन संबंधी महत्वपूर्ण पहलुओं पर भी प्रकाश डाला। डॉ. तिवारी के सहयोगी डॉ. सचिन नागरे ने औषधीय फसलों के उन्नत उत्पादन, रोग एवं कीट प्रबंधन तथा बाजार संभावनाओं के विषय में किसानों को जानकारी प्रदान की।

कार्यक्रम का संचालन एवं समन्वय डॉ. हेमराज द्विवेदी कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि औषधीय पौधों की खेती किसानों के लिए कृषि विविधीकरण एवं अतिरिक्त आय का सशक्त माध्यम बन सकती है तथा राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड की विभिन्न योजनाओं का लाभ उठाकर किसान इस क्षेत्र में बेहतर अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

इस अवसर पर बरौंधा मण्डल अध्यक्ष श्री कामता यादव, समाजशिल्पी दम्पत्ति श्री उदय यादव एवं श्रीमती सरोज यादव तथा श्री रामदत्त पांडे विशेष रूप से उपस्थित रहे। सभी अतिथियों ने किसानों को प्राकृतिक एवं औषधीय खेती अपनाने तथा पर्यावरण संरक्षण में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान किसानों को विभिन्न औषधीय पौधे एवं रोपण सामग्री का वितरण भी किया गया, जिससे वे अपने खेतों एवं गृह वाटिकाओं में इनका रोपण कर अतिरिक्त आय अर्जित कर सकें। विशेषज्ञों द्वारा किसानों की जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए औषधीय फसलों की बाजार संभावनाओं एवं सरकारी योजनाओं की जानकारी भी प्रदान की गई। कार्यक्रम में ग्राम नकैला एवं आसपास के क्षेत्रों से आए 106 किसानों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। किसानों ने प्रशिक्षण को अत्यंत उपयोगी बताते हुए भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रमों के नियमित आयोजन की अपेक्षा व्यक्त की।

कार्यक्रम का शुभारंभ भारत माता, पंडित दीनदयाल उपाध्याय एवं राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख के चित्रों पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया। उपस्थित अतिथियों एवं किसानों ने ग्रामीण स्वावलंबन, आत्मनिर्भर कृषि तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के संकल्प को दोहराया।

केवीके द्वारा जल संकटग्रस्त ग्रामों में तालाब जीर्णोंद्धार का कार्य, ग्राम वासियों ने राष्ट्रऋषि नानाजी को किया याद

मझगवां/ सतना जिले के मझगवॉ क्षेत्र के जल संकट को ध्यान में रखते हुए 1996 में भारत रत्न राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख के कुशल मार्गदर्शन में दीनदयाल शोध संस्थान कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवॉ, सतना द्वारा मझगवॉ विकासखण्ड के 17 ग्रामों में जल संरक्षण एवं संवर्धन का कार्य जलग्रहण समितियों के माध्यम से प्रारम्भ किया गया था। तैयार की गयी संरचनाओं के पुनः जीर्णोंद्धार आज की आवश्यकता है। इसी को ध्यान में रखते हुए दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन एवं कोषाध्यक्ष श्री वसंत पण्डित के मार्गदर्शन में कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवॉ के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. नवीन कुमार शर्मा एवं अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में जलग्रहण समिति, कानपुर ने तालाब जीर्णोंद्धार का कार्य प्रारम्भ किया गया। जिसको देखकर ग्राम वासियों में खुशी का माहौल है और बार-बार राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख को याद कर रहे हैं। इस पहल से भू जल स्तर में सुधार के साथ-साथ कुएं, हैण्डपम्पों और खेती के लिए पर्याप्त जल की व्यवस्था हो सकेगी।

संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख की प्रेरणा से शुरू किए गए जल संरक्षण कार्यों को फिर से हरा-भरा और उपयोगी बनाने के लिए पुरानी संरचनाओं का चिह्नीकरण के साथ चेक-डैम, तालाब, और सोख्ता गड्ढों की सूची बनाने की बात कही है जिन्हें मरम्मत की जरूरत है। उन्होंने कहा कि जलग्रहण समितियों को फिर से सक्रिय करें ताकि जन-भागीदारी सुनिश्चित हो सके और जल संरचनाओं का वैज्ञानिक सुधार हो।

स्वाध्याय मंडल-पश्चिम एशिया संघर्ष का आर्थिक पक्ष-भारत की स्थिति

नई दिल्ली/ दीनदयाल शोध संस्थान, झंडेवाला एक्सटेंशन पर प्रत्येक माह के दूसरे शनिवार को नियमित स्वाध्याय मंडल आयोजित किया जा रहा है। इस संदर्भ में 'पश्चिम एशिया संघर्ष का आर्थिक पक्ष : भारत की स्थिति' पर आयोजित स्वाध्याय मंडल में मुख्य वक्ता आर्थिक मामलों की विशेषज्ञ, लेखक तथा पूर्व मुख्य आयकर आयुक्त डा. शिखा दरबारी रहीं। उन्होंने पश्चिम एशिया संघर्ष का आर्थिक पक्षः भारत की स्थिति पर मुख्य वक्तव्य रखा।

डॉ. दरबारी ने अपने वक्तव्य में कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रदर्शन पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष के कारण उत्पन्न वैश्विक अनिश्चितता के बावजूद मजबूत बना हुआ है। वैश्विक परिवेश कच्चे तेल के दाम बढ़ने, वित्तीय स्थिति सख्त होने और प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं की विकास दर कमजोर पड़ने का असर भारतीय अर्थव्यवस्था पर भी पडा है। पश्चिम एशिया संघर्ष का भारतीय अर्थव्यवस्था पर सीधा और गहरा प्रभाव पड़ता है। इससे कच्चे तेल के दाम, लॉजिस्टिक्स लागत, और आयात बिल बढ़ते हैं, जिससे देश के मुद्रास्फीति और चालू खाता घाटे (current account deficit) पर दबाव आता है।

इस संकट के कारण भारत के सामने कई चुनौतियां और अवसर पैदा होते हैं। भारत अपनी जरूरत का लगभग 50% से अधिक कच्चा तेल और 90% तक एलपीजी पश्चिम एशिया से आयात करता है। संघर्ष के कारण तेल आपूर्ति बाधित होती है और कीमतें बढ़ती हैं, जिससे भारत का आयात बिल काफी बढ़ जाता है। खाड़ी देशों (GCC) में लाखों भारतीय काम करते हैं। इन देशों की अर्थव्यवस्था पर संघर्ष का असर पड़ने से वहाँ रोजगार के अवसरों और भारत आने वाले धन (रेमिटेंस) पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने की आशंका रहती है।

लाल सागर और होर्मुज जलडमरूमध्य (Strait of Hormuz) से गुजरने वाले व्यापार मार्गों में व्यवधान से भारत की लॉजिस्टिक्स लागत बढ़ जाती है। इन चुनौतियों के बावजूद, भारत के मजबूत घरेलू मैक्रोइकॉनॉमिक बुनियादी कारकों (जैसे विदेशी मुद्रा भंडार और मजबूत घरेलू मांग) से अर्थव्यवस्था इस झटके को सहने में काफी हद तक सक्षम बनी हुई है।

इस अवसर पर दीनदयाल शोध संस्थान के प्रधान सचिव श्री निखिल मुंडले ने अध्यक्षता की तथा विषय पर अपने विचार साझा किये। NIFM के प्रो. आलोक शैरी तथा ICAR के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. अमित गोस्वामी ने भी अपना दृष्टिकोण साझा किया। विषय प्रवर्तन मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री अमिताभ वशिष्ठ ने किया।

स्वाध्याय मंडल- 'जल निकायों का पुनरुद्धार: प्रकृति आधारित समाधान'

दूषित पानी को प्राकृतिक रूप से स्वच्छ और पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्जीवित करने की विशेषज्ञों ने बताईं तकनीकें

नई दिल्ली/ दीनदयाल शोध संस्थान झंडेवाला एक्सटेंशन, दिल्ली में शनिवार 09 मई को स्वाध्याय मंडल: 'जल निकायों का पुनरुद्धार: प्रकृति आधारित समाधान' विषय पर आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य वक्तव्य दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रख्यात पर्यावरणविद और प्रोफेसर एमिरिटस प्रोफेसर सी आर बाबू जी द्वारा रखा गया तथा विशेष वक्तव्य पद्मश्री सम्मानित श्री उमाशंकर पांडेय का हुआ।

इसके साथ ही पूर्वी दिल्ली की वैलकम झील के पुनरुद्धार हेतु विधायक श्री जितेन्द्र महाजन जी की पहल पर कार्यसमूह की बैठक भी हुई।

इस अवसर पर संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने मुख्य वक्ता का सम्मान किया तथा प्रधान सचिव श्री निखिल मुण्डले द्वारा अतिथियों एवं पधारे सभी गणमान्य जनों का आभार व्यक्त किया गया। संचालन सीईओ श्री अमिताभ वशिष्ठ ने किया।

अपने मुख्य वक्तव्य में जाने-माने पर्यावरणविद् प्रो. सी.आर. बाबू ने जल निकायों और नदियों के पुनरुद्धार के लिए 'प्रकृति-आधारित समाधानों' (Nature-based Solutions) का एक सफल मॉडल प्रजेंटेशन के माध्यम से प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि कृत्रिम आर्द्रभूमि (Constructed Wetlands) और जैव विविधता पार्कों का निर्माण करके दूषित पानी को प्राकृतिक रूप से साफ किया जाता है और पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्जीवित किया जाता है।

कृत्रिम आर्द्रभूमि (Constructed Wetlands) जिसके

अंतर्गत पानी को साफ़ करने का एक प्राकृतिक तरीका है। इसमें सीवर के गंदे पानी को बजरी, पत्थरों और विशेष पौधों की मदद से गुजारा जाता है। इन पौधों (जैसे टाइफा) की जड़ें पानी के जहरीले तत्वों और भारी धातुओं को सोख लेती हैं। जैव विविधता पार्क (Biodiversity Parks) जिसमें बंजर, रेतीली या खारी जमीन पर देसी पौधों और घासों को लगाकर मिट्टी की उपजाऊ क्षमता को फिर से बनाया जाता है। धीरे-धीरे यह जगह एक प्राकृतिक जंगल और झील में बदल जाती है, जहाँ पक्षी, तितलियाँ और जानवर खुद वापस आने लगते हैं।

प्रो. सी.आर. बाबू ने दिल्ली के यमुना जैव विविधता पार्क और नीला हौज़ झील जैसे स्थानों के कायाकल्प को उदाहरण स्वरूप बताते हुए कहा कि किस तरह उनकी टीम द्वारा गंदे नालों के पानी को प्राकृतिक आर्द्रभूमि से साफ करके स्वच्छ पानी झीलों में छोड़ा गया है और इस विधि में बिजली या महंगी मशीनों की जरूरत नहीं होती है और भूजल स्तर भी बढ़ता है।

पद्मश्री सम्मानित श्री उमाशंकर पांडेय ने अपने वक्तव्य में कहा कि बुंदलेखंड के जिन इलाकों में मालगाड़ी से पानी की सप्लाई होती थी वहां अब धान की बंपर पैदावार हो रही है, उस क्षेत्र में राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख के द्वारा जल संरक्षण की दिशा में सार्थक प्रयास आज एक मिसाल बने हुए हैं। चित्रकूट की मां मंदाकिनी भी हमारी सदानीरा हो, उसके लिए हम सब मिलकर क्या कर सकते हैं और इस दिशा में हम सब यहां इकट्ठा होकर सबके सार्थक प्रयास पूज्य नानाजी का स्वप्न साकार कर रहे हैं।

स्वाध्याय मंडल-डेटा सेंटर क्रांतिः आर्थिक अवसर, पर्यावरणीय चुनौतियां और रोज़गार का प्रश्न

बाजार, समाज, अर्थव्यवस्था, संचार और सुरक्षा पर डिजिटल कंपनियों का एकाधिपत्य

नई दिल्ली/ डेटा सेंटर क्रांति ने डिजिटल दुनिया को तेजी से आगे बढ़ाया है, लेकिन इससे गंभीर पर्यावरणीय चुनौतियां और रोजगार से जुड़े जटिल प्रश्न भी खड़े हुए हैं। भारत में डेटा सेंटर्स की क्षमता तेजी से बढ़ रही है। यह विकास जहां एक ओर अर्थव्यवस्था को मजबूत करता है, वहीं दूसरी ओर भारी संसाधनों की मांग करता है। उपरोक्त उद्गार दीनदयाल शोध संस्थान झंडेवाला एक्सटेंशन पर 13 जून को आयोजित स्वाध्याय मंडल 'डेटा सेंटर क्रांतिः आर्थिक अवसर, पर्यावरणीय चुनौतियां और रोजगार के प्रश्न' विषय पर वक्ताओं द्वारा व्यक्त किए गए। स्वाध्याय मंडल में प्रख्यात अधिवक्ता एवं स्तंभकार श्री विराग गुप्ता ने डेटा सेंटर क्रांति पर अपना मुख्य

वक्तव्य रखा। इस अवसर पर प्रख्यात विचारक एवं चिंतक माननीय गोविंदाचार्य जी का भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। साथ ही श्री श्याम जाजू जी, NIFM के प्रोफेसर आलोक शैरी एवं प्रो. घोष ने भी अपने विचार साझा किये।

वक्ताओं ने कहा कि वैश्विक डिजिटल डेटा में 20% योगदान देने के बावजूद , भारत में पर्याप्त डेटा सेंटर क्षमता का अभाव है जो इसकी डिजिटल क्षमता को सीमित करता है। आर्थिक विकास, रोज़गार सृजन, पर्यावरण, डेटा संप्रभुता और वैश्विक AI नेतृत्व के लिये इस अंतर को कम करना आवश्यक है। भारत की डिजिटल आकांक्षाओं को साकार करने के लिये रणनीतिक निवेश, नीति समर्थन और धारणीय बुनियादी ढांचा महत्त्वपूर्ण है।

विराग गुप्ता ने अपने मुख्य वक्तव्य में प्रजेंटेशन के माध्यम से बताया कि भारत का एआई डेटा सेंटर बाजार तीव्र गति से बढ़ रहा है। विभिन्न उद्योग अध्ययनों के अनुसार भारतीय एआई डेटा सेंटर बाजार वर्ष 2025 के लगभग 1.19 अरब डॉलर से बढ़कर 2030 तक 3 अरब डॉलर से अधिक हो सकता है। हालांकि इस विकास के साथ कुछ गंभीर चुनौतियां भी जुड़ी हुई हैं। सबसे बड़ी चुनौती ऊर्जा की है।

डेटा सेंटर ऊर्जा की अत्यधिक खपत करते हैं। इन सुविधाओं में विशाल कंप्यूटिंग और स्टोरेज उपकरण होते हैं जिन्हें लगातार चालू रखना आवश्यक होता है। इनमें स्थित सर्वर सर्च इंजन और स्ट्रीमिंग सेवाओं जैसे कार्यभार संभालते हैं, जिन्हें संसाधित करने के लिए पर्याप्त विद्युत शक्ति की आवश्यकता होती है। औसतन, 500 से 2,000 सर्वरों वाले एक पारंपरिक छोटे डेटा सेंटर की बिजली खपत 1 से 5 मेगावाट के बीच होती है। वहीं, हजारों सर्वरों वाले एक हाइपरस्केल डेटा सेंटर की बिजली खपत 20 मेगावाट से लेकर 100 मेगावाट से अधिक होती है। ये डेटा सेंटर फुटबॉल मैदान जितने बड़े होते हैं और इतनी ऊर्जा खपत करते हैं जिससे एक छोटे शहर को बिजली दी जा सकती है।

भारत जैसे विकासशील देश के लिए यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण है कि बढ़ती ऊर्जा आवश्यकता को किस प्रकार पूरा किया जाए। यदि डेटा सेंटर केवल कोयला आधारित बिजली पर निर्भर रहेंगे तो कार्बन उत्सर्जन बढ़ेगा और पर्यावरणीय संकट गहरा सकता है। इसलिए भविष्य के डेटा सेंटरों को हरित ऊर्जा के साथ जोड़ना अनिवार्य होगा। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बैटरी स्टोरेज और ग्रीन हाइड्रोजन जैसे विकल्पों का व्यापक उपयोग करना होगा। विशेषज्ञों का मानना है कि वर्ष 2030 तक भारत के डेटा सेंटर देश की कुल बिजली खपत का लगभग 3 प्रतिशत उपयोग कर सकते हैं। जो हमारे जल, जंगल और जमीन पर अतिरिक्त बोझ डालेगा।

जल संरक्षण भी एक बड़ी चुनौती है। परंपरागत डेटा सेंटरों में सर्वरों को ठंडा रखने के लिए बड़ी मात्रा में जल का उपयोग किया जाता है। लेकिन अब नई तकनीकों के माध्यम से इस समस्या का समाधान खोजा जा रहा है। माइक्रोसॉफ्ट जैसे संस्थान क्लोज्ड-लूप कूलिंग सिस्टम विकसित कर रहे हैं, जिससे जल की खपत में भारी कमी लाई जा सकती है।

रोजगार की बात करें तो डेटा सेंटर से रोजगार नहीं है, स्वावलंबन नहीं है, डेटा सेंटर काफी हद तक स्वचालित होते हैं। विशालकाय हाइपर-स्केल सुविधाओं में भारी पूंजी लगती है, लेकिन स्थानीय स्तर पर स्थायी रोजगार के अवसर अपेक्षाकृत सीमित होते हैं।

डिजिटल कुबेर अब आकाश, चंद्रमा और समुद्र पर कब्जा कर रहे हैं। अमेरिका में डाटा सेंटर का बड़े पैमाने पर विरोध हो रहा है, जिसके चलते कई डाटा सेंटर बंद हो गए हैं या स्थान परिवर्तन कर रहे हैं। दुनिया के 100 सबसे गर्म शहर भारत में है और इस डाटा सेंटर की क्रांति से और इसे बढ़ा रहे हैं।

डिजिटल अर्थव्यवस्था की ओर भारत के कानून लागू नहीं हो रहे हैं, अभी तक कोई ठोस कानून नहीं बन पाया है यह चिंतनीय विषय है। आज बाजार, समाज, अर्थव्यवस्था, संचार और सुरक्षा पर इन डिजिटल कंपनियों का एकाधिपत्य हो गया है, जिससे सामाजिक संकट, बेरोजगारी, राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक असमानता और पर्यावरणीय संकट खड़ा हो गया है।

स्वाध्याय मंडल का संयोजन करते हुए दीनदयाल शोध संस्थान के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री अमिताभ वशिष्ठ ने कहा कि भारत केवल डेटा सेंटरों का उपभोक्ता न बने, बल्कि एआई चिप निर्माण, सर्वर विनिर्माण, क्लाउड तकनीक, उन्नत कूलिंग प्रणालियों और स्वदेशी कृत्रिम बुद्धिमत्ता मॉडलों के विकास में भी अग्रणी भूमिका निभाए। आत्मनिर्भर भारत का वास्तविक स्वरूप तभी साकार होगा जब डेटा भी स्वदेशी होगा, कम्प्यूटिंग भी स्वदेशी होगी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता भी भारतीय आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित होगी।

इस अवसर पर वरिष्ठ राष्ट्रीय विचारक के.एन. गोविंदाचार्य जी का भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, जिसमें उन्होंने कहा कि डेटा सेंटर समय की आवश्यकता हो सकता है, आज भारत हर तरह से सक्षम है, मजबूत है। भारत को इस दिशा में स्व आंकलन करना चाहिए। 'विदेशी को स्वदेशानुकूल और स्वदेशी को युगानुकूल' भारत के आर्थिक और सांस्कृतिक विकास का मूल मंत्र है। इसका अर्थ है कि बाहर से आने वाली तकनीक या विचारों को भारत की प्रकृति के अनुसार ढालना चाहिए, और अपनी प्राचीन भारतीय परंपराओं को आज के आधुनिक समय के अनुसार उपयोगी बनाना चाहिए।

कार्यक्रम के अंत में दीनदयाल शोध संस्थान के उपाध्यक्ष श्री अतुल जैन ने आभार व्यक्त करते हुए गूगल आधारित जीपीएस तकनीक का उदाहरण देते हुए अपने अरुणाचल प्रदेश के प्रवास का वृत्तांत बताते हुए कहा कि जीपीएस उपग्रहों से सिग्नल लेकर आपकी सटीक जगह बताता है। गूगल मैप्स जैसे ऐप्स इसी तकनीक से रास्ता और दूरी मापते हैं। आजकल अधिकतर लोग यात्रा के दौरान इसी पर निर्भर है, यह तकनीक कभी-कभी गलत नक्शों या पुराने डेटा के कारण गलत रास्ता दिखा देती है। इससे बचने के लिए हमेशा आंख मूंदकर इस पर भरोसा न करें। जीपीएस सबसे छोटा रास्ता चुनता है। कई बार यह आपको ऐसे कच्चे या संकरे रास्तों पर ले जाता है जो बंद होते हैं या खतरनाक होते हैं। पहाड़ी इलाकों या अनजान जगहों पर जीपीएस पर पूरी तरह निर्भर न रहें। यह आगे की गहरी खाई या टूटी सड़क को नहीं भांप पाता।

छत्तीसगढ़ प्रवास: संगठन सचिव श्री अभय महाजन

रायपुर, छत्तीसगढ़ प्रवास के दौरान संगठन सचिव श्री अभय महाजन जी ने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद एवं स्वदेशी जागरण मंच के वर्तमान एवं पूर्व कार्यकर्ताओं के साथ विचार विमर्श किया। उन्होने छत्तीसगढ़ राज्य मानवाधिकार आयोग के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री गिरधारी नायक जी तथा प्रख्यात नेत्र चिकित्सक डा. आनंद सक्सेना जी से भी भेंट की, इसके अलावा उन्होने बिलासपुर, कोरबा, दुर्ग– भिलाई के कार्यकर्ताओं से भेंट की।

दीनदयाल शोध संस्थान के अध्यक्ष डा. पूर्णेंदु जी सक्सेना तथा संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने रायपुर में छत्तीसगढ़ के सम्माननीय उप मुख्यमंत्री श्री अरुण साव जी तथा सम्माननीय वित्त एवं पर्यावरण मन्त्री श्री ओ. पी. चौधरी के साथ भेंट कर संस्थान की गतिविधियों से परिचय कराया। संस्थान के सी ई ओ श्री अमिताभ वशिष्ठ भी उनके साथ रहे।

छत्तीसगढ़ के महासमुंद में ओंकारबंध स्थित समाज सेवी, प्रकाशक और उद्योगपति श्री आत्मबोध अग्रवाल जी के जैविक कृषि प्रकल्प और संदीपन गौशाला का दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने अवलोकन और भ्रमण किया। इस अवसर पर पूर्व विधायक, समाज सेवी डा. विमल चोपड़ा जी और स्वदेशी जागरण मंच के श्री सुब्रत चाकी जी और संस्थान के सी ई ओ श्री अमिताभ वशिष्ठ भी उपस्थित रहे।

रायपुर में दीनदयाल शोध संस्थान के अध्यक्ष डा. पूर्णेंदु सक्सेना जी और संगठन सचिव श्री अभय महाजन जी ने सेवाग्राम परिसर का भ्रमण और अवलोकन कर अधिकारियों से प्रकल्प के विषय में जानकारी ली। इस अवसर पर सी ई ओ श्री अमिताभ वशिष्ठ भी उनके साथ रहे।

चित्रकूटः दीनदयाल शोध संस्थान, चित्रकूट पधारे कर्नाटक के कोडगू विश्व विद्यालय के कुलपति प्रो. अशोक अलूर जी, हावेरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.सुरेश जंगमशेट्टी जी तथा चामराजनगर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.एम आर गंगाधर जी का संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने स्वागत किया। सम्माननीय अतिथियों ने सियाराम कुटीर जाकर श्रद्धेय नानाजी देशमुख को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये, साथ ही संस्थान के प्रकल्पों का अवलोकन किया।

मुंबईः दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन जी ने मुंबई में समस्त महाजन के कार्यालय पहुंचकर श्री गिरीश भाई शाह और उनकी टीम के साथ विमर्श किया। इस अवसर पर ग्राम स्वावलंबन, गोसंवर्धन, प्राकृतिक खेती, जल संरक्षण, गोचर विकास, वृक्षारोपण, ग्रामीण अर्थव्यवस्था तथा सतत विकास जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत चर्चा हुई। इस अवसर पर दीनदयाल शोध संस्थान के सचिव श्री मनुवीर अग्रवाल और साधारण सभा सदस्य श्री सुनील जायसवाल भी उपस्थित रहे।

चित्रकूटः राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल के सदस्य माननीय भैय्या जी जोशी ने चित्रकूट प्रवास के दौरान संस्थान के प्रकल्प राम दर्शन का अवलोकन किया। उन्होने भगवान कामतानाथ जी के प्राचीन मुखारविन्द पर आरती कर प्रभु कामतानाथ जी का भी आशीर्वाद प्राप्त किया। संगठन सचिव श्री अभय महाजन जी उनके साथ रहे।

भोपालः मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में RCVP Nronha प्रशासन एवं प्रबंधकीय अकादमी में मध्य प्रदेश के जनजातीय कार्य विभाग द्वारा दो दिवसीय राज्य स्तरीय जनजातीय उपयोजना कार्यशाला में संस्थान के कोषाध्यक्ष श्री वसंत पंडित जी के नेतृत्व में दीनदयाल शोध संस्थान के कार्यकर्ताओं ने सहभाग किया। श्री वसंत पंडित ने संस्थान के अनुभवों के आधार पर उपयोगी सुझावों को प्रस्तुत किया।

अंबाजोगाई, बीड़ (महाराष्ट्र) / बीड जिले के ग्रामीण क्षेत्र की किसान महिलाएँ, दीनदयाल शोध संस्थान कृषि विज्ञान केंद्र, अंबाजोगाई के मार्गदर्शन में प्रसंस्करण एवं मूल्यवर्धन के माध्यम से उत्कृष्ट कार्य कर रही हैं। उनके परिश्रम, कौशल और आत्मविश्वास ने उन्हें अपनी एक विशिष्ट पहचान दिलाई है। ग्रामोदय मार्केट हब के माध्यम से महिलाओं को उत्पादन, प्रसंस्करण, पैकेजिंग तथा बाज़ार से जुड़ाव के नए अवसर प्राप्त हो रहे हैं, जिससे आत्मनिर्भरता का मार्ग और अधिक प्रशस्त हुआ है। अक्षय तृतीया के शुभ मुहूर्त पर डीडी सह्याद्री चैनल पर ग्रामोदय मार्केट हब की सफलता गाथा का वीडियो प्रसारित हुआ, यह सफलता गाथा ग्रामीण महिला सशक्तिकरण का एक प्रेरणादायी आदर्श है!

नई दिल्ली: दिल्ली की सुन्दर नर्सरी में ट्राईफेड, जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित Bharat Tribes के तहत वनधन कोनक्लेव आयोजित हुआ। इसका उद्घाटन मंत्रालय के सम्माननीय मन्त्री श्री दुर्गादास उइके जी ने किया। जिसमें दीनदयाल शोध संस्थान के कोषाध्यक्ष श्री वसंत पंडित जी ने संस्थान द्वारा संचालित वनधन केन्द्रों की जानकारी रखी।

चित्रकूट: हरियाणा के जिंदल स्कूल ऑफ़ गवर्नमेंट एंड पब्लिक पॉलिसी (JSGoPP) के छात्र और फैकल्टी सदस्यों ने प्रो. सूरज कुमार की देखरेख में चित्रकूट प्रकल्प का अवलोकन किया। संगठन सचिव श्री अभय महाजन जी और कोषाध्यक्ष श्री वसंत पंडित जी ने छात्रों का मार्गदर्शन किया। JSGoPP के छात्रों ने ग्रामीण जीवन और शासन-व्यवस्था को प्रत्यक्ष रूप से समझने के लिए 'रूरल इमर्शन प्रोग्राम' (ग्रामीण अनुभव कार्यक्रम) में हिस्सा लिया।

इस दौरे के दौरान प्रतिभागियों ने DRI के कार्यकर्ताओं, स्थानीय समुदायों, किसानों और गाँव के प्रमुख व्यक्तियों से बातचीत की और कृषि, आजीविका, शिक्षा व स्वास्थ्य सेवा जैसे अहम मुद्दों को समझा। इस कार्यक्रम का मकसद क्लासरूम की पढ़ाई को असल दुनिया की चुनौतियों से जोड़ना था। इस दौरान श्री वसंत पंडित जी ने बताया कि ऐसी पहल ज़मीनी हकीकत के प्रति व्यावहारिक समझ और संवेदनशीलता विकसित करने में मदद करती हैं, जिससे छात्र प्रभावी ढंग से पब्लिक पॉलिसी से जुड़े कार्यों के लिए तैयार हो सकें।

आरएनआई नं. दिल्ली-एन/2002/7201

गुरुकुल संकुल

दीनदयाल शोध संस्थान, चित्रकूट सतना (मध्य प्रदेश)

बालकों के लिए शैक्षणिक व्यवस्था युक्त आवासीय परिसर
शिक्षित वानप्रस्थी दंपतियों की आवश्यकता है।

जिनकी अहर्ताएं निम्नलिखित हैं :-

- ❖ दंपति को शिक्षित, ऊर्जावान, संवेदनशील एवं सामाजिक कार्यों के प्रति समर्पित होना चाहिए।
- ❖ दंपति की आयु लगभग 60 वर्ष की होनी चाहिए और शारीरिक, मानसिक रूप से स्वस्थ एवं पारिवारिक दायित्व से मुक्त हो।
- ❖ कक्षा 6 से 12 तक को कम-से-कम एक विषय में शिक्षण की योग्यता रखते हों। शिक्षकों को इस हेतु वरीयता दी जाएगी।
- ❖ प्रत्येक दंपति की भोजन एवं आवासीय व्यवस्था संस्थान निःशुल्क करेगा, इसके अतिरिक्त संस्थान के नियमों के अंतर्गत मानदेय भी दिया जाएगा।
- ❖ शैक्षणिक योग्यता की छाया प्रतियों के साथ आवेदन पत्र सादे पृष्ठ पर निम्नलिखित पते पर भेजें।

–: प्रभारी : –

गुरुकुल संकुल, दीनदयाल शोध संस्थान
चित्रकूट, जिला सतना (म.प्र.) दूरभाष : 07670-265353, 265528
ईमेल : drichitrakoot@chitrakoot.org